

सितम्बर 2014

# दादावाणी

किंमत ₹ 10



संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ९ अंक : ११

अखंड क्रमांक : १०७

सितम्बर २०१४

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,  
पो.ओ. : अडालज,  
जि. : गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:  
8155007500

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta on behalf of  
Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

**Owned by**

**Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

**Printed at**

**Amba Offset**

Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**

**Mahavideh Foundation**  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**१५ साल**

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## घर में क्लेश मिटाने की कला

### संपादकीय

वसुधैव कुटुंबकम् की जो भावना हिन्दु संस्कृति की नींव में रही है, उस भावना की यथार्थता वास्तव में क्या इस काल में पूर्ण रूप से देखने को मिल सकती है? पूरा विश्व तो ठीक है लेकिन जहाँ परिवार में ही व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण यदि यह भावना फलीभूत नहीं हो रही हो तो फिर इस संसार रूपी रथ को अंतिम ध्येय तक किस प्रकार पहुँचा सकते हैं?

विवाहित जीवन का प्रमुख ध्येय क्या होना चाहिए? भोग-विलास या विषय? नहीं, वास्तव में तो एक-दूसरे के पूरक बनकर, मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य के रूप में मुक्ति सुख को प्राप्त करना, यही ध्येय होना चाहिए न? और यह लक्ष्य किस प्रकार सिद्ध कर सकते हैं? तो कहते हैं, कि शुद्ध निश्चय और शुद्ध व्यवहार द्वारा।

यह संसार क्या है? कर्मों को खपाने की दुकान। पूर्व में बंधे हुए हिसाबों की वसूली करने का स्थान। ऐसे मृगजल जैसे इस जटिल संसार में स्वरूप ज्ञान (आत्मज्ञान) के सिवा सच्चा सुख कैसे प्राप्त किया जा सकता है? जब तक आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक तो लोग इस संसार में राग-द्वेष से भटकते रहते हैं। लेकिन निश्चय की प्राप्ति के बाद, शुद्धात्मा का लक्ष्य प्राप्त होने के बाद, फिर तो राग-द्वेष के हिसाबों में से छूटकर वीतरागता को प्राप्त करना, यही लक्ष्य होना चाहिए न? तभी संसार में मुक्ति का आनंद अनुभव कर सकते हैं न?

ऐसा अद्भुत ज्ञान प्राप्त होने के बाद भी सांसारिक जीवन में मुक्तता और आनंद का अनुभव क्यों नहीं हो पाता? इसका कारण है जीवन व्यवहार में उत्पन्न होनेवाले टकराव। इस टकराव का क्या कारण है? अज्ञानता! और वो ही अहंकार है। ज्ञान प्राप्त होने के बाद भले ही अब डिस्चार्ज अहंकार है, लेकिन पूर्व जन्म के राग-द्वेष के असरवाला है। इसलिए जब व्यवहार सामने आता है तब जागृति नहीं रहती। खास तौर पर *चीकणी फाइलों* के साथ, वहाँ पर खुद तन्मयाकार होकर बरतता है और दूसरों की भूलें और दोष देखकर खुद तो दुःखी होता ही है, लेकिन दूसरों को भी दुःखी करता है। इसे आदर्श व्यवहार कैसे कहेंगे?

मोक्ष में जाने के लिए आदर्श व्यवहार की ज़रूरत है। ध्येय तक पहुँचने के लिए यदि संसाररूपी रथ के दोनों पहिए ‘निश्चय और व्यवहार’ समान रहेंगे, तभी तो रथ आगे बढ़ेगा न? यदि व्यवहार में पंक्चर पड़ जाए तो फिर रथ आगे बढ़ने की बजाय वहीं गोल-गोल घूमता रहेगा न, कोल्हू के बैल की तरह! और वह हमें पुसाएगा ही नहीं न? इसीलिए परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री), निश्चय प्राप्त करवाने के बाद आदर्श व्यवहार किस प्रकार किया जा सकता है उसके लिए स्वानुभवपूर्ण सचोट और उपयोगी व्यवहार कला सिखाते हैं। जिसके आधार पर विडम्बनाओं के बगैर संसार पार किया जा सकता है।

दादाजी कहते हैं कि मोक्ष में जाने के लिए संसार या फाइलें बाधक नहीं हैं, लेकिन खुद की जागृति की कभी बाधक है। व्यवहार तो व्यवस्थित के अधीन निपट ही रहा है, तो फिर वहाँ दूसरों की भूल क्यों निकालें? व्यवहार तो प्रेमपूर्वक होना चाहिए। जहाँ आसक्ति, अपेक्षा, आग्रह वगैरह दोषारोपण नहीं होते। कषाय-विषय नहीं होते। केवल शुद्ध प्रेम ही होता है। रखवाली ऐसी होनी चाहिए कि हमें कॉट न लगें और फूल पूर्ण रूप से खिलकर, जीवन में सुगंध फैला सकें। और उसके लिए संसार में पति-पत्नी की समान ज़िम्मेदारी है कि आज्ञापूर्वक और किसी को भी दुःखरूप न हो, ऐसे आदर्श व्यवहार का आचरण करके मोक्ष का पुरुषार्थ कर लें।

प्रस्तुत संकलन में उद्बोधित परम पूज्य दादाश्री की व्यवहार कला फाइल नं-२ के ऋणानुबंधन में से मुक्त होने की सचोट और सरल समझ प्रदान करती है। और वही इन अक्रम विज्ञानी की महात्माओं को अनमोल भेंट है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

घर में क्लेश मिटाने की कला

मोक्ष के लिए बाधक हैं खुद के सूक्ष्म कर्म

**प्रश्नकर्ता :** दादा! संसार में स्त्री हो, शादी की हो और मोक्ष में जाना है, तो मन में होता रहता है कि ‘मैंने तो शादी की है, तो अब मोक्ष में कैसे जा सकूँगा?’

**दादाश्री :** अरे, स्त्री बाधक नहीं है, तेरे सूक्ष्म कर्म बाधक हैं। तेरे स्थूल कर्म बिल्कुल बाधक नहीं हैं। वह मैंने ‘ओपन’ (खुला) किया है। यह साइन्स ‘ओपन’ नहीं करूँ तो भीतर घबराहट-घबराहट और घबराहट रहेगी। भीतर *अजंपा*, (बेचैनी, अशांति) *अजंपा*, *अजंपा* रहेगा! साधु कहते हैं कि हम मोक्ष में जाएँगे। अरे, आप कैसे मोक्ष में जाओगे? क्या छोड़ना है, इतना तो जानते नहीं। आपने तो स्थूल को छोड़ा है, आँखों से दिखे, कान से सुनाई दे, वह छोड़ा है। उसका फल तो इस जन्म में ही मिल जाएगा। क्या पत्नी को छोड़कर भाग जाना है? पत्नी को छोड़कर भाग जाओ और अपना मोक्ष हो, ऐसा हो सकता है क्या? किसी को दुःख देकर अपना मोक्ष हो, ऐसा हो सकता है क्या? इसलिए बीवी-बच्चों के प्रति सभी फर्ज़ निभाओ और पत्नी जो ‘भोजन’ दे वह चैन से खाओ, लेकिन यह सब स्थूल है, वह समझ जाना! स्थूल के पीछे आपका अभिप्राय ऐसा नहीं रहना चाहिए कि जिससे सूक्ष्म में चार्ज हो। इसीलिए मैंने आपको ‘पाँच वाक्य’ (पाँच आज्ञा) दिए हैं। भीतर ऐसा अभिप्राय नहीं रहना चाहिए कि ‘यह करेक्ट (सही) है। मैं जो करता हूँ, जो भोगता हूँ वह करेक्ट है’ ऐसा अभिप्राय

नहीं रहना चाहिए। बस अगर इतना सा ही आपका अभिप्राय बदला कि हो गया सबकुछ। यह विज्ञान तो नये ही प्रकार का है। यह तो ‘अक्रम विज्ञान’ है, जिससे लोगों को हर तरह की ‘फेसिलिटि’ (सुगमता) प्राप्त हो जाएगी।

एक-दूसरे के लिए पूरक बनें

सभी धर्मों ने यह उलझन पैदा कर दी हैं कि स्त्रियों को छोड़ दीजिए। तब कहता है, ‘अरे, स्त्री को छोड़ दूँ तो मैं कहाँ जाऊँगा? मेरे लिए खाना कौन बनाएगा? मैं अपना यह व्यापार करूँ या घर पर चूल्हा फूँकू?’

**प्रश्नकर्ता :** इसलिए एक दूसरे के पूरक हैं।

**दादाश्री :** हाँ, पूरक हैं सब। ‘परस्पर देवो भव’ यानी स्त्री को छोड़ दो तो मोक्ष मिलेगा, अगर ऐसा कहे तो स्त्री ने क्या गुनाह किया है?

**प्रश्नकर्ता :** और स्त्रियाँ भी तो ऐसा कहेंगी न कि हमें भी मोक्ष चाहिए, हमें आपकी ज़रूरत नहीं है।

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा ही बोलेंगी न! आपका और पत्नी का साझेदारी का व्यापार है।

धर्म में आगे बढ़ने के लिए पत्नी लानी है; दोनों साथ में रहें और आगे बढ़ें। लेकिन यह तो विषयरूप हो गया है। ऐसी स्थिति में आगे बढ़ना तो कहाँ रहा बल्कि लड़ाई-झगड़े करते हैं। स्त्री हो और विषय न हो तो कोई हर्ज ही नहीं है। हाँ,

अपने ऋषि-मुनि विवाह करते थे न! एक-दो, एक लड़का और एक लड़की बस, और कुछ नहीं। फिर केवल फ्रेंडशीप (मित्रता)। ऐसा जीवन जीना है।

### व्यवहार समाधानपूर्वक हो

**प्रश्नकर्ता :** शुद्धात्मा रूप होने के पश्चात् संसार में पत्नी के साथ संसार व्यवहार कैसा करना चाहिए? और वह कैसे भाव से करना चाहिए?

**दादाश्री :** यह व्यवहार तो आपको पत्नी के साथ... दोनों का समाधान हो, ऐसा व्यवहार रखना। आपका समाधान हो और उनका भी समाधान हो जाए, ऐसा व्यवहार रखना। उन्हें असमाधान रहे और आपका समाधान हो रहा हो तो ऐसा व्यवहार बंद कर देना। यदि बच्चे आपसे कहें, 'पापाजी!', तो कहना, हाँ बेटा चल तेरा....! 'पापाजी' कहकर बुलाए तो उसे 'मना' मत करना। खुश होकर, राजी-खुशी से कहना है कि 'चल मैं आता हूँ।' 'पापाजी' कहना उसका धर्म है और वह हम, यानी 'पापाजी' को उसे एन्करेज (प्रोत्साहन) करना चाहिए। व्यवहार है न? अपने से स्त्री को कोई दुःख नहीं होना चाहिए। आपको कैसा लगता है? कैसा व्यवहार करना चाहिए? उसे दुःख न हो वैसा। हो सकता है या नहीं हो सकता? हाँ, स्त्री से शादी की है, वह संसार व्यवहार चलाने के लिए है, न कि सन्यासी बनने के लिए। और फिर स्त्री कहीं मुझे गालियाँ नहीं दे कि 'दादाजी ने तो मेरा संसार बिगाड़ दिया!' मैं ऐसा नहीं कहना चाहता।

### उलझे नहीं, ऐसा उपाय करें

ऐसा है, इन संसारियों को ज्ञान दिया है, मैंने सन्यासी बनने का नहीं कहा है। लेकिन जो भी फाइलें हों उनका समभाव से *निकाल* (निपटारा) करो और प्रतिक्रमण करो, ये दो उपाय बताएँ हैं। यह दोनों करोगे तो आपकी दशा को उलझानेवाला

कोई है ही नहीं। यदि उपाय नहीं बताए होते तो किनारे पर खड़ा ही नहीं रहा जा सकेगा न? किनारे पर जोखिम है।

### निकाली भूल, भोंका शूल

**दादाश्री :** कभी क्या वह तेरी भूल निकालती हैं या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** निकालती है।

**दादाश्री :** क्या उस समय तू उनकी भूल निकालता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** अवश्य।

**दादाश्री :** हाँ, मैं वही कहना चाहता हूँ कि फैमिली (कुटुंब) में भूल नहीं निकालनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कुछ समझाइए न, भूल क्यों नहीं निकालनी चाहिए?

**दादाश्री :** लेकिन क्या भूल निकालनी चाहिए? भूल निकालने से क्या फायदा? इमोशनल (भावुक) इंसान ही भूल निकालता है। किसी को भी भूल निकालने का अधिकार नहीं है। भूल को दिखाना कितने समय से चल रहा है? यह बिगाड़ गया, क्या ऐसा कभी बोलते हो?

**प्रश्नकर्ता :** थोड़ा-थोड़ा रहता है, छोटी-छोटी गलतियाँ निकालता हूँ।

**दादाश्री :** क्या उसकी भूल कभी-कभार निकालते हो या हर रोज़?

**प्रश्नकर्ता :** हर रोज़।

**दादाश्री :** नहीं, भूल नहीं निकालनी चाहिए। भूल निकालनी चाहिए क्या? यदि कोई मित्र हो और उसकी भूल निकालें तो मित्रता छूट जाएगी न।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन भूल निकालने पर उसे दुःख क्यों होता है?

## दादावाणी

**दादाश्री :** लेकिन ऐसा कहने की ज़रूरत ही क्या थी? ऐसा है न, लोगों ने इस तरह झगड़ें करके पूरा घर बरबाद कर दिया है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन यदि किसी रास्ते चलते आदमी को बोलें तो उसे दुःख हो जाता है लेकिन घर में ऐसा दुःख नहीं होना चाहिए, भूल निकालें तो। देर इज़ नथिंग रोंग इन देट (इसमें कोई बुराई नहीं है)!

**दादाश्री :** नहीं, भूल तो निकालनी ही नहीं चाहिए। दुःख तो होता ही है हमेशा। भूल निकालने से दुःख तो होगा ही। भूल निकालनी ही नहीं चाहिए। वह तो उसका अपमान करने के बराबर है। यह तो आपको उन पर बैर है एक तरह का या फिर मालिकीपना (पतिपना) करते हो। मैं हूँ! जैसे बड़ा आया पति!

एक भाई से पूछा, 'घर में कभी वाइफ की भूल निकालते हो?' तब कहा, 'वह है ही भूलवाली, इसलिए भूल निकालनी ही पड़ती है न!' मैंने कहा, 'अक्ल का बोरा आया!' बेचने जाएँगे तो बोरी के चार आने भी नहीं आएँगे और वह मान बैठा है कि यह बहू भूलवाली है, लो!' ऐसा मान बैठता है। कितना गलत दिखेगा? ये तो झूठ मुठ की गलतियाँ निकालेगा और कहेगा, 'तुझ में अक्ल नहीं है।' रोज़ चिल्लाता है। अक्ल (समझ) तो किसे कहते हैं, भूल को कब निकालता है कि वास्तव में जब वह खुद नहीं समझती हो तब! और फिर वह उपकार माने, तब वह अक्लमंद कहलाएगा। वही कहेगी, 'बहुत अच्छा हुआ। आपने मुझे यह बताया। वर्ना मैं गलत रास्ते पर चली जाती। अच्छा किया कि आपने मुझे सिखाया।' तब वह एडवान्स होगी। अरे, इस कढ़ी के मामले में एडवान्स का तू क्या करेगा? तू ही (सीधा) नहीं हुआ न! तुझ में बरकत तो है नहीं!

### कढ़ी खारी, आधार के आधार पर

यह ज्ञान तो मुझे पचासवें वर्ष में हुआ था,

लेकिन मैं तो चालीस की उम्र में भी अगर कढ़ी खारी होती थी तो पानी डाल देता था। वह हीरा बा ने एक बार देख लिया। तब उन्होंने कहा, 'पानी डाला! पानी डाला!' मैंने कहा, 'अब नहीं डालूँगा।' मैं जानता था कि चूल्हे पर भी पानी डालकर ही फीकी करते हैं न, हम नीचे फीकी कर दे। अरे, नहीं तो मैं क्या करता था? अगर थोड़ा शीरा पड़ा हो न मेरी थाली में या फिर कोई मीठी चीज़ हो तो वह कढ़ी में मसल देता और उसे फीकी कर देता। किसी भी तरह से खाने लायक कर देता। फिर उसके लिए चीनी वगैरह नहीं माँगता था। ताकि उन्हें पता नहीं चले कि यह कढ़ी तो खारी बन गई। ऐसा कहना-वहना नहीं है। कुछ भी माँगता-करता नहीं था। हमारे यहाँ सभी से पूछो तो यही कहेंगे, 'नहीं, दादाजी ने कभी भी कुछ कहा ही नहीं!' मैं क्यों कहूँ? कहनेवाले सभी होशियार हैं न! फिर स्त्रियाँ आपस में क्या कहती हैं, 'ये कलमुँहे ही हैं!' अपने को ऐसे अपयश दें, उसके बजाय सीधे रहो न! कढ़ी खारी किस आधार पर बनी? तो वह यह कि, 'आधार के आधार पर ऐसी है यह। उसका आधार है, यों ही नहीं है, निराधार नहीं है।' यह तो पागलपन है। ऐसा समझ में नहीं आने की वजह से कहता है कि 'उसने कढ़ी खारी कर दी।' अरे, वह ऐसा करती होगी? उन्हें तो अगर सौ रुपये दें तो भी कढ़ी न बिगाड़े।

### फैमिली में होना चाहिए प्रेमपूर्वक व्यवहार

घर में किसी की भूल नहीं निकालनी चाहिए। आपको कैसी लगती है यह बात?

**प्रश्नकर्ता :** बढ़िया।

**दादाश्री :** इसके बावजूद भी क्या ऐसा नहीं जानते सब लोग?

**प्रश्नकर्ता :** कई लोगों को ऐसी आदत पड़ गई हो तो उसमें क्या करें?

**दादाश्री :** आदत नहीं। यह तो, ऊपरीपना चाहिए उसे। उसे जान-बूझकर भूल निकालनी है! अब, यह गलत है। इसे फैमिली नहीं कहते। फैमिली अर्थात् प्रेम से रहना चाहिए।

यह सब गलत लगता है न। मन में वह इंतज़ार करता है कि फिर से कब मैं इनकी भूल निकालूँ, ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारी लाइफ सुंदर होनी चाहिए। क्या आपको यह बात उचित लगती है?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल।

**दादाश्री :** अब जो भूलें वह जानती हो ऐसी भूलें मत निकालना।

(कोई भी) दखलंदाज़ी नहीं होनी चाहिए। उन्हें ऐसा नहीं लगना चाहिए कि ये व्यर्थ में ही सुधारने का प्रयत्न करते रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन यदि पति को ऐसा लगता हो तो?

**दादाश्री :** वह फिर रशिया और अमरीका जैसा हो जाएगा। यदि अमरीका ऐसा करता है तो रशिया वैसा करता है, अतः फिर दोनों आमने-सामने लड़ाई करते हैं और इससे फैमिली लाइफ बिगड़ जाती है। हमें ऐसा शोभा नहीं देता। थोड़ा बहुत सुधार होना चाहिए। हम इन्डियन (भारतीय) हैं। सोचने के बाद भी यदि न बदलें तो हम इन्डियन कैसे? नहीं समझीं आप बहन?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, समझ गई।

**दादाश्री :** इसलिए बहनों, आपको समझ लेना है कि जो भूल पति समझ सकते हैं, वह भूल आपको नहीं निकालनी है। और जो भूल बहनें समझ सकती हैं, वह भूल पति को नहीं निकालनी है।

## प्रेम से सुधरें संबंध

**प्रश्नकर्ता :** कई लोग खुद की भूलें समझते हैं फिर भी नहीं सुधरे तो?

**दादाश्री :** वे कहने से नहीं सुधरेंगे, कहने से तो बल्कि उल्टा चलेगा।

यह सब सुधारना हो तो प्रेम से सुधरेगा। इन सब को मैं जो सुधारता हूँ न, वह प्रेम से सुधारता हूँ। हम प्रेम से ही यह कहते हैं इसलिए काम नहीं बिगड़ता और ज़रा सा भी द्वेष से कहा कि वह बात बिगड़ जाती है। दूध में दही नहीं डाला हो और यों ही ज़रा सी हवा लग जाए, तब भी दूध का दही बन जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** आप जिस प्रेम की बात कर रहे हैं, उस प्रेम में अपेक्षाएँ होती हैं क्या?

**दादाश्री :** अपेक्षा? प्रेम में अपेक्षा नहीं होती। शराब पीता हो उस पर भी प्रेम रहता है और शराब नहीं पीता उस पर भी प्रेम रहता है। प्रेम सापेक्ष नहीं होता।

## प्रेम हो वहाँ भूलें नहीं दिखती

प्रेम सर्वत्र होना चाहिए। पूरे घर में प्रेम ही होना चाहिए। और जहाँ प्रेम है, वहाँ कोई भूल नहीं निकालता। प्रेम हो वहाँ भूल नहीं दिखती। यह प्रेम नहीं है, इगोइज़म (अहंकार) है। प्रेम वही कहलाता है जिसमें भूल नहीं लगे। प्रेम में चाहे कितनी भी भूल हो फिर भी निभा ले। क्या आपको समझ में आता है?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, जी।

**दादाश्री :** अतः अगर भूल-चूक हो जाए तो प्रेम की खातिर जाने देना। प्रेम सबकुछ निभा लेता है, निभा लेता है न?

बाकी यह सब तो आसक्ति है! घड़ीभर में

तो पत्नी गले में हाथ डालकर लिपट जाती है और घड़ीभर में वापस तकरार करती है। तुमने ऐसा किया और तुमने वैसा किया। प्रेम में कभी भी भूल नहीं दिखती। यह तो, प्रेम है ही कहाँ? आपको क्या लगता है? घरमें संतोष होना चाहिए या नहीं होना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** होना ही चाहिए।

**दादाश्री :** क्या घर में टकराव करना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** यदि हमें भूलें नहीं दिखें तो हमें समझना चाहिए कि इससे प्रेम है हमें। क्या सचमुच में प्रेम होगा इन लोगों को?

**प्रश्नकर्ता :** डाउटफुल (शंकास्पद)।

**दादाश्री :** तो फिर इसे प्रेम कैसे कहा जाए?

### जहाँ मतभेद वहाँ दुःख

पत्नी कहती है 'मैं तुम्हारी हूँ' और पति कहता है कि 'मैं तुम्हारा हूँ', फिर मतभेद क्यों? जैसे-जैसे आप दोनों के बीच 'प्रोब्लम' (समस्या) बढ़ें जैसे-जैसे अलगाव पैदा होगा। 'प्रोब्लम' 'सॉल्व' (हल) हो जाएँ, तो फिर अलगाव नहीं होगा। मतभेद के कारण दुःख हैं। और सभी को 'प्रोब्लम' होते ही हैं, सिर्फ आपको ही होते हैं ऐसा नहीं है। जितनों ने शादी की हैं, उन्हें 'प्रोब्लम' खड़े हुए बिना नहीं रहे।

मेरा आज तक किसी के भी साथ मतभेद हुआ ही नहीं है, तो फिर मनभेद तो होगा ही नहीं न! जहाँ मतभेद नहीं हो, वहाँ मनभेद तो हो ही नहीं सकता। हम तो प्रेमस्वरूप हैं! सब मेरे अपने ही हैं। ऐसे प्रेम की वजह से ही यह सबकुछ है।

विचारशील इंसान समझकर धीरे से मतभेद खत्म कर देता है। मतभेद के कारण ही तो यह सारा

जगत् कायम है और धीरे-धीरे यह कम करने की चीज़ है। आपको क्या लगता है?

मतभेद यानी एक तरह से टकराव ही है, ऐसा आपको समझ में आया?

### जहाँ प्रेम, वहाँ नहीं होती विभक्तता

भोजन करते समय टेबल पर क्या आपको मतभेद होते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** वे तो होते ही हैं न?

**दादाश्री :** क्यों, शादी करते समय ऐसा क्रार किया था?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं।

**दादाश्री :** उस समय तो क्रार यह किया था कि 'समय वर्ते सावधान।' घर में वाइफ के साथ 'तुम्हारा और मेरा' ऐसी वाणी नहीं होनी चाहिए। वाणी विभक्त नहीं होनी चाहिए, वाणी अविभक्त होनी चाहिए। हम अविभक्त कुटुंब के हैं न?

### पलटकर भी टाल दिया मतभेद

हमें हीरा बा के साथ कभी भी मतभेद पड़ा नहीं, कभी भी वाणी में 'मेरा-तेरा' हुआ नहीं। लेकिन एक बार हमारे बीच मतभेद पड़ गया था। उनके भाई के वहाँ पहली बेटी की शादी थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि 'उन्हें क्या देना है?' तब मैंने उन्हें कहा कि 'जो आपको ठीक लगे वह, लेकिन घर में ये तैयार चाँदी के बरतन पड़े हुए हैं, वे दे दीजिए! नया मत बनवाना।' तब उन्होंने कहा कि 'आपके ननिहाल में तो मामा की बेटी की शादी हो तो बड़े-बड़े थाल बनवाकर देते हैं!' वे 'मेरे' और 'आपके' शब्द बोले तब से ही मैं समझ गया कि आज आबरू गई अपनी। हम एक के एक, वहाँ 'मेरा-तेरा' होता होगा? मैं तुरंत ही समझ गया और तुरंत ही पलट गया, मुझे जो कहना था उस पर से

पूरा ही मैं पलट गया, मैंने उनसे कहा, 'मैं ऐसा नहीं कहना चाहता हूँ। आप चाँदी के बरतन देना और ऊपर से पाँच सौ एक रुपये देना, उन्हें काम आएँगे।' तब वे कहते हैं, 'हं... इतने सारे रुपये तो कभी दिए जाते होंगे? आप तो जब देखो तब भोले के भोले ही रहते हो, जिस किसी को देते ही रहते हो।' मैंने कहा, 'वास्तव में मुझे तो कुछ आता ही नहीं।'

देखो, यह मेरा मतभेद पड़ रहा था, लेकिन किस तरह से सँभाल लिया पलटकर! अंत में मतभेद नहीं पड़ने दिया। पिछले तीस-पैंतीस वर्षों से हमारे बीच नाम मात्र का भी मतभेद नहीं हुआ है। बा भी देवी जैसे हैं। मतभेद किसी जगह पर हमने पड़ने ही नहीं दिए। मतभेद पड़ने से पहले ही हम समझ जाते हैं कि यहाँ से पलट डालो, और आप तो सिर्फ दाएँ और बाएँ, दो तरफ से ही बदलना जानते हो कि ऐसे पेच चढ़ेंगे या ऐसे पेच चढ़ेंगे। हमें तो सत्रह लाख तरह के पेच घुमाने आते हैं। लेकिन गाड़ी रास्ते पर ला देते हैं, मतभेद नहीं होने देते। अपने सत्संग में बीस हज़ार जितने लोग और चार हज़ार जितने महात्मा हैं, लेकिन हमारा किसी के साथ मतभेद नहीं है। जुदाई मानी ही नहीं मैंने किसी के साथ!

### उल्टे का सुल्टा करे समकित

जहाँ मतभेद है वहाँ अंश ज्ञान है और जहाँ मतभेद ही नहीं, वहाँ विज्ञान है। जहाँ विज्ञान है, वहाँ सर्वाज्ञान है। जब 'सेन्टर' में बैठकर देखें, तभी मतभेद नहीं रहे, तभी मोक्ष होता है। लेकिन डिग्री पर बैठे हों और 'हमारा-तुम्हारा' रहे तो उसका मोक्ष नहीं होता। निष्पक्षपाती का मोक्ष होता है।

समकित की निशानी क्या? तब कहे, घर में सब लोग उल्टा कर डालें फिर भी खुद सीधा कर डाले। सभी बातों में सीधा करना वह समकित की

निशानी है। इतना ही पहचानना है कि यह 'मशीनरी' कैसी है, उसका 'फ्यूज़' उड़ जाए तो किस तरह से 'फ्यूज़' ठीक करना है। सामनेवाले की प्रकृति के साथ 'एडजस्ट' होना आना चाहिए। यदि सामनेवाले का 'फ्यूज़' उड़ जाए, तब भी हमारा 'एडजस्टमेन्ट' होता है। लेकिन सामनेवाले का 'एडजस्टमेन्ट' टूटे तो क्या होगा? 'फ्यूज़' गया। इसलिए फिर तो वह दीवार से टकराता है, दरवाज़े से टकराता है लेकिन वायर नहीं टूटता। इसीलिए कोई फ्यूज़ डाल दे तो वापस रास्ते पर आएगा, नहीं तो तब तक वह उलझता रहेगा।

### मतभेद परिणामित होता है मनभेद में

बहुत बड़ा, विशाल जगत् है, लेकिन यह जगत् खुद के रूम के अंदर है इतना ही मान लिया है और वहाँ भी यदि जगत् मान रहा होता तो अच्छा था। लेकिन वहाँ भी 'वाइफ' के साथ लट्टेबाज़ी करता है!

पत्नी और पति दोनों पड़ोसी के साथ लड़ रहे हों, तब दोनों एकमत और एकजुट होते हैं। पड़ोसी को कहते हैं कि 'आप ऐसे और आप वैसे।' हम समझें कि यह मियाँ-बीवी की टोली अभेद टोली है, नमस्कार करने जैसी है। फिर घर में जाएँ तो बहन से ज़रा चाय में चीनी कम पड़ी हो, तब फिर वह कहेगा कि मैं तुझे रोज़ कहता हूँ कि चाय में चीनी ज़रा ज़्यादा डाल। लेकिन तेरा दिमाग ठिकाने नहीं रहता। यह दिमाग के ठिकानेवाला घनचक्कर! तेरे ही दिमाग का ठिकाना नहीं है न! अरे, किस तरह का है तू? रोज़ जिसके साथ सौदेबाज़ी करनी होती है, वहाँ कलह करनी चाहिए?

वाइफ (पत्नी) के साथ भी मतभेद हो, वहाँ भी एकता न रहे तो फिर और कहाँ रखोगे? एकता यानी क्या कि कभी भी मतभेद न पड़े। इस एक व्यक्ति (पत्नी) के साथ निश्चित करना है कि आपमें



## दादावाणी

और मुझमें मतभेद नहीं पड़े। इतनी एकता करनी चाहिए। ऐसी एकता की है आपने?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कभी सोचा ही नहीं। यह पहली बार सोच रहा हूँ।

**दादाश्री :** हाँ, वह सोचना तो पड़ेगा न? भगवान कितना सोच-सोचकर मोक्ष में गए! क्या मतभेद पसंद है?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं पसंद है।

**दादाश्री :** जब मतभेद हों तब झगड़े होते हैं, चिंता होती है। इस मतभेद में ऐसा होता है, तो मनभेद में क्या होगा? मनभेद हो तब डिवाँर्स (तलाक) लेते हैं और तनभेद हो, तब अर्थी निकलती है।

### समझदार छोड़ देता है

मतभेद आपसे ज़्यादा हो जाते हैं या इनसे?

**प्रश्नकर्ता :** इनसे ज़्यादा हो जाते हैं।

**दादाश्री :** ओहोहो! मतभेद यानी क्या है? मैं आपको मतभेद का अर्थ समझाता हूँ? डोरी खींचनेवाला खेल होता है न! आपने वह देखा है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** दो-चार लोग एक तरफ से खींचते हैं और दो-चार लोग दूसरी तरफ से खींचते हैं। मतभेद मतलब डोर खींचना। अतः हमें यह घर पर देख लेना है कि ये खूब जोर से खींच रही हैं और हम भी जोर से खींचे, अगर दोनों लोग खींचेंगे तो फिर क्या होगा?

**प्रश्नकर्ता :** टूट जाएगी।

**दादाश्री :** और टूटने के बाद गाँठ लगानी पड़ेगी। अतः गाँठ लगाकर फिर चलाना पड़े उसके

बजाय तो साबुत रखें तो क्या बुरा है? अतः वे अगर बहुत खींचें न, तो हमें छोड़ देना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दोनों में से छोड़े कौन?

**दादाश्री :** जो समझदार है। जिसमें अक्ल ज़्यादा होगी वह छोड़ देगा और कम अक्लवाला खींचे बगैर रहेगा ही नहीं। इसलिए हमें, अक्लवाले को छोड़ देना चाहिए। छोड़ देने का मतलब यह नहीं कि एकदम छोड़ देना है। एकदम छोड़ देने से तो वह गिर जाएगी, इसलिए धीरे-धीरे, धीरे-धीरे छोड़ना है? यदि मेरे साथ कोई आग्रह करे न तो मैं धीरे-धीरे छोड़ देता हूँ, वर्ना गिर जाएगा बेचारा। अब आप छोड़ देंगे ऐसा? अब छोड़ना आ जाएगा न? छोड़ दोगे न? छोड़ देना, वर्ना फिर गाँठ बाँधकर चलानी पड़ेगी डोर। रोज़-रोज़ गाँठ लगाना क्या अच्छा दिखेगा? वापस गाँठ तो लगानी ही पड़ेगी न? डोर तो वापस चलानी ही पड़ेगी न? आपको क्या लगता है?

### छोड़ना, लेकिन सावधानीपूर्वक

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, करना ही पड़ेगा।

**दादाश्री :** हं.. अतः छोड़ देना है, लेकिन वह भी फिर ऐसे कि वे गिर न जाए! फिर उनके मन में हिम्मत आ जाएगी कि ये इतना बड़प्पन रखते हैं तो मैं भी बड़प्पन रखूँ। उनका भी मन होगा ऐसा करने का।

**प्रश्नकर्ता :** कोई नहीं रखता, एक भी झुकता नहीं।

**दादाश्री :** वह तो, जो सयाना होगा वह छोड़ देगा, वर्ना एक बार गाँठ पड़ने के बाद वह जाएगी नहीं। इसलिए घर में डोर को इस तरह रखो कि गाँठ लगानी ही नहीं पड़े। टूटे नहीं उस तरह से रखो। तो क्या इतना नहीं समझना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** समझना चाहिए।

## दादावाणी

**दादाश्री :** जो साबुत है, फिर उसे क्यों तोड़ता है? तोड़ने के बाद गाँठ लगानी पड़ेगी या नहीं लगानी पड़ेगी? 'लेकिन मुझे ऐसा मालूम नहीं था कि बाद में यह गाँठ लगानी पड़ेगी।' अरे, टूटने से पहले ही हमें छोड़ देना चाहिए, वर्ना गाँठ पड़ जाएगी। तो फिर से वह डोर बेकार गई न! अतः हमें यह हिसाब समझना चाहिए वर्ना गाँठ तो लगानी ही पड़ेगी न?

क्या घर में मतभेद होना चाहिए? लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए। घर में यदि मतभेद होता है तो यू आर अनफिट फॉर... अगर हज़बेन्ड ऐसा करे तो वह अनफिट फॉर हज़बेन्ड (पति होने के लिए लायक नहीं है) और यदि वाइफ ऐसा करे तो वह अनफिट फॉर वाइफ (पत्नी होने के लिए लायक नहीं है)।

### मतभेद का कारण

**प्रश्नकर्ता :** मतभेद क्यों होते हैं, उसका क्या कारण है?

**दादाश्री :** मतभेद होते हैं क्योंकि वह समझता है कि मैं अक्रलमंद हूँ और वह समझती है कि मैं अक्रलवाली हूँ! बड़े आए अक्रल के बोरे! बेचने जाएँ तो चार आने भी न मिलें, वही अक्रल का बोरा कहलाता है। इसके बजाय तो हम सयाने बन जाएँ। उनकी अक्रल को हम देखा करें कि 'ओहोहो! कैसी अक्रलवाली है!' तो वह भी शांत हो जाएगी। लेकिन हम भी अक्रलवाले और वह भी अक्रलवाली। जहाँ अक्रल ही झगड़ने लगे वहाँ क्या हो सकता है फिर?

अक्रलवाला मैंने देखा ही नहीं कहीं भी। अक्रलमंद किसे कहते हैं कि जो कभी भी किसी की नकल नहीं करता, वही अक्रलवाला। ये सब तो नकली लोग हैं। कहेंगे 'मैंने देख देखकर सीखा है।' स्त्रियों को नकल करके ही कढ़ी बनानी आई,

देखकर सीख गई। साड़ी भी दूसरों की देखकर लाती हैं और फिर कहेगी, 'मैं अक्रलवाली हूँ!'

### मतभेद का निवारण

**प्रश्नकर्ता :** घर में मतभेद दूर करने के लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** पहले तो पता लगाना चाहिए कि मतभेद किस वजह से होते हैं। कभी ऐसा मतभेद पड़ता है कि एक बेटा और एक बेटी हो, तो फिर क्या इसलिए मतभेद होते हैं कि दो बेटे क्यों नहीं हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, वैसे तो छोटी-छोटी बातों को लेकर मतभेद हो जाते हैं।

**दादाश्री :** अरे, इन छोटी-छोटी बातों में, यह तो इगोइज़म है। यदि वह बोलें कि यह ऐसा है, तब कहना 'ठीक है।' ऐसा कह दें तो फिर कुछ भी नहीं। लेकिन वहाँ हम अपनी अक्रल खड़ी कर देते हैं। अक्रल से अक्रल लड़ती है, इसलिए मतभेद हो जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** 'यह ठीक है,' मुँह से ऐसा बोलने के लिए क्या करना चाहिए? ऐसा बोला नहीं जाता, उस अहम् को कैसे दूर करें?

**दादाश्री :** सही कहते हो, वह बोला नहीं जाता। उसकी कुछ दिनों तक प्रेक्टिस करनी पड़ेगी। मैं जो यह कह रहा हूँ न, यह उपाय करने के लिए कुछ दिनों तक प्रेक्टिस करो न! फिर बाद में वह फिट हो जाएगा। तुरंत नहीं होगा।

### 'पिटार्ई' का फिर लेती है बदला

**प्रश्नकर्ता :** दादा, मेरा मिजाज़ अगर जाता है, तब कितनी बार मेरा हाथ पत्नी पर उठ जाता है।

**दादाश्री :** स्त्री को कभी भी मारना नहीं चाहिए। जब तक आपका शरीर मज़बूत होगा, तब

तक वह चुप रहेगी, फिर वह आप पर चढ़ बैठेगी। स्त्री को और मन को मारना वह तो संसार में भटकने के दो साधन हैं। इन दोनों को मारना नहीं चाहिए। उनके पास से तो समझाकर काम लेना पड़ता है।

हमारा एक मित्र था। उसे मैं जब भी देखूँ तब पत्नी को एक तमाचा लगा देता था, उसकी ज़रा-सी भूल दिखे तो मार देता था। फिर मैं उसे अकेले में समझाता कि ये तमाचा तूने उसे मारा लेकिन उसकी वह नोंध (अत्यंत राग अथवा द्वेष लंबे समय तक याद रखना) रखेगी। तू नोंध नहीं रखता लेकिन वह तो नोंध रखेगी ही। अरे, यह तेरे छोटे-छोटे बच्चे, तू तमाचा मारता है, तब तुझे टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं। वे भी नोंध रखेंगे। और बाद में, माँ और वे बच्चे मिलकर इसका बदला लेंगे। वे कब बदला लेंगे? जब तेरा शरीर ढीला पड़ेगा तब। इसलिए स्त्री को मारना नहीं। मारने से तो उल्टा हमें ही नुकसानदायक, अंतरायरूपी हो सकता है।

आश्रित किसे कहा जाता है? खूँटे से बंधी गाय होती है, उसे मारोगे तो वह कहाँ जाएगी। घर के लोग खूँटे से बाँधे हुए हैं, उन्हें मारोगे तो आप टुच्चे कहलाओगे। उन्हें छोड़ दे और फिर उन्हें मारो, तो वे तुझे मारेंगे या फिर भाग जाएँगे। बाँधे हुए को मारना, वह शूरवीर का काम कैसे कहलाएगा? वह तो निर्बल का काम कहलाएगा!

घर के लोगों को तो तनिक भी दुःख दिया ही नहीं जाना चाहिए। जिनमें समझ न हो, वे घरवालों को दुःख देते हैं।

**हमारी कमियों के कारण सामनेवाला नहीं सुधरता**

**प्रश्नकर्ता :** हमारे कहने पर भी यदि वह नहीं सुधरे, तो क्या हमें ऐसा समझना चाहिए कि अपने में ही कुछ कमी है, जिसकी वजह से वह नहीं सुधरता?

**दादाश्री :** हाँ, हमारे गुनाहों के कारण ही नहीं सुधरते। गुनाह अपना ही होता है लेकिन उसका पता नहीं चलता। अगर कभी अपना खुद का गुनाह ढूँढ लें तो भगवान हो जाएँ। जिसे खुद का गुनाह, बड़ा गुनाह पता चल जाए तो वह भगवान हो जाए।

**प्रश्नकर्ता :** उसके लिए क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** लेकिन उसे उसका दोष पता ही नहीं चलता न! वह दोष कैसे मिलेगा? वह तो जब ज्ञानी से सभी पाप धुलवा दें, तब वह गुनाह दिखता है! वर्ना औरों के सब दोष दिखते हैं, तेज़ी से!

**सत्ता सिर्फ 'व्यवस्थित' की**

**प्रश्नकर्ता (बहन) :** कई बार स्त्री की बात सही हो और पुरुष की गलत हो, फिर भी पुरुष कहे कि 'नहीं, मेरी ही बात सही है।' और ऐसा माने कि स्त्री की बुद्धि एड़ी में है, ऐसा मानकर उसकी बात उड़ा दे, उसकी चलने ही न दे, तो उसका क्या?

**दादाश्री :** कब नहीं चलने देते?

**प्रश्नकर्ता :** यानी स्त्री की बात सही हो, फिर भी उसे गलत ठहराते हैं, एक्सेप्ट (स्वीकार) नहीं करते उसे।

**दादाश्री :** अपना नहीं चलने दे तो अच्छा है। ज़िम्मेदारी तो नहीं रहेगी न किसी तरह की! और वह 'व्यवस्थित' के अनुसार कहता है न, वह क्या कुछ ज़्यादा कह सकता है! नहीं चलने देता, उसमें व्यवस्थित ही है न! वह गप्प थोड़े ही है?

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन ऐसी समझ उस समय होनी चाहिए न?

**दादाश्री :** नहीं होगी तो आ जाएगी, मार खाकर आएगी। समझदारी तो मार खाकर भी आएगी ही न! सबकुछ 'व्यवस्थित' है।

### हमें शांत हो जाना चाहिए

**प्रश्नकर्ता (बहन) :** स्त्री की सलाह सही हो, फिर भी न माने और पति अपनी मनमानी करे, तो फिर बिगड़ जाता है, उल्टा हो जाता है सब। फिर घर में सभी को हिला देते हैं, गुस्सा करते हैं, बच्चों पर चिढ़ते हैं, पत्नी पर चिढ़ते हैं, मारते हैं, तोड़-फोड़ करें, थालियाँ पटक दें, ऐसे में क्या करें?

**दादाश्री :** उस समय हमें समझ लेना चाहिए कि मूड बिगड़ गया है, चाय-पानी पिला देना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** यदि दोनों में से कोई एक शांत नहीं हो और बात को संभाल न ले, तो हल (निबटारा) आएगा ही नहीं इसका, ठीक है न?

**दादाश्री :** हल आएगा ही नहीं! वर्ना हल होगा तो सही, लेकिन बैर बढ़ाकर। वह तो जब मेरा मौका आएगा न तब... वह मौका देखकर कब्जे में लेगा। इससे तो निबटारा लाना अच्छा है। मौके की तलाश में नहीं रहना है।

यदि घर में एक व्यक्ति भी ऐसा कहनेवाला मिले कि 'आपमें तो कम अक्रल है।' तब हमें ऐसा समझ लेना है कि 'यह ऐसा ही बोलनेवाला है, इसलिए हमें एडजस्ट हो जाना है।' उसके बजाय यदि हम सामने जवाब देंगे तो थक जाएँगे। क्योंकि वह तो हमसे टकराया, लेकिन यदि हम भी टकराएँ तो ऐसा तय हो जाएगा न कि हमारी भी आँखें नहीं हैं? मैं वह साइन्स (विज्ञान) बताना चाहता हूँ कि प्रकृति के साइन्स को समझो, बाकी आत्मा तो अलग वस्तु है।

**प्रश्नकर्ता (बहन) :** हम चाहे कितना भी शांत रहें लेकिन अगर पुरुष गुस्सा हो जाएँ तो हमें क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** वे गुस्सा हो जाएँ और लड़ाई-झगड़ा करना हो तो आप भी गुस्सा करना, वर्ना बंद

(शांत हो जाना) कर देना। यदि फिल्म बंद करनी हो तो शांत हो जाना चाहिए और फिल्म बंद नहीं करनी हो तो पूरी रात चलने देना। कौन मना करता है? फिल्म पसंद लगती है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, फिल्म पसंद नहीं है।

**दादाश्री :** गुस्सा होकर क्या करना है? वह व्यक्ति खुद गुस्सा नहीं करता, यह तो मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट गुस्सा करता है। खुद गुस्सा नहीं करता। बाद में उसे खुद को मन में पश्चाताप होता है कि यह गुस्सा नहीं किया होता तो अच्छा था।

**प्रश्नकर्ता :** उन्हें शांत करने का उपाय क्या है?

**दादाश्री :** अगर वह मशीन गरम हो जाए और उसे ठंडा करना हो तो थोड़ी देर ऐसे ही पड़ा रहने दें तो थोड़ी देर में अपने आप ठंडी हो जाएगी और यदि हाथ लगाएँ उसके साथ छेड़खानी करें तो जल जाएँगे हम।

### वहाँ मौन रखना, सही उपाय है

**प्रश्नकर्ता :** जब मैं सत्य (सच) बात कहती हूँ, तब मुझे घर में कोई समझ नहीं पाता और इससे फिर वे लोग गलत तरीके से उल्टा समझ लेते हैं।

**दादाश्री :** उस वक्त हमें बात से अलग रहकर मौन रखना पड़ेगा। उसमें भी फिर दोष तो किसी का होता ही नहीं है। दोष तो आपना ही होता है। ऐसे-ऐसे लोग भी हैं जो कि पड़ौस में अपने साथ परिवार की तरह हों न तो वे अपने कुछ कहने से पहले ही अपनी सारी बात समझ जाते हैं। लेकिन ऐसे लोग हमें क्यों नहीं मिले और ये लोग ही क्यों मिले? इसमें किसका सिलेक्शन (पसंद) है? अतः सभी चीजें हैं इस जगत् में, लेकिन हमें नहीं मिलती तो इसमें भूल किसकी है? अतः यदि घरवाले नहीं समझें तो वहाँ पर हमें मौन रहना चाहिए और कोई उपाय नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादाजी, मेरी शिकायत कौन सुनेगा?

**दादाश्री :** अगर तू फरियाद करेगी तो तू फरियादी बन जाएगी। मैं तो, जो फरियाद लेकर आता है उसी को गुनहगार (अपराधी) मानता हूँ। ऐसा वक्त ही क्यों आया कि तुम्हें फरियाद करनी पड़ी? फरियादी ज्यादातर अपराधी ही होते हैं। खुद गुनहगार हों, तभी फरियाद करने आता है। यदि तू फरियाद करेगा तो तू फरियादी बन जाएगा और सामनेवाला अभियुक्त बनेगा। अतः उसकी दृष्टि में तू आरोपी सिद्ध होगा। इसलिए किसी के भी विरुद्ध फरियाद मत करना।

### गुणा-भाग से लाओ निबटारा

**प्रश्नकर्ता :** तो मुझे क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** यदि 'वे उल्टे हैं' ऐसा दिखे तो कहना, 'ये तो सबसे अच्छे इंसान हैं, तू ही गलत है।' इस प्रकार गुणन हो गया हो तो भागाकार कर देना चाहिए और यदि भागाकार (भाग) हो गया हो तो गुणन कर देना चाहिए। ये गुणा-भाग क्यों सिखाते हैं? संसार में हल (समाधान) लाने के लिए।

वह (पति) भागाकार कर रहा हो तो हमें गुणन करना है ताकि संख्या शून्य हो जाए। सामनेवाले व्यक्ति के लिए यह सोचना कि 'उसने मुझे ऐसा बोल दिया, वैसा बोल दिया' वही अपराध है। रास्ते में जाते समय यदि दीवार से टकरा जाओ तो उसे क्यों नहीं डाँटते? पेड़ को जड़ कैसे कह सकते हो? जो चोट पहुँचाए वे सब हरे पेड़ ही हैं! यदि गाय का पैर आप पर पड़ जाए तो क्या आप कुछ कहते हैं, ऐसा ही इन सब लोगों का है। 'ज्ञानीपुरुष' सभी को किस तरह माफी देते हैं? वे समझते हैं कि ये बेचारे समझते नहीं हैं, पेड़ जैसे हैं और समझदार को तो कहना ही नहीं पड़ता। वे तो तुरंत अंदर प्रतिक्रमण कर लेते हैं।

### खुद सच्चे हैं उसका प्रमाण क्या?

**प्रश्नकर्ता (बहन) :** हम खुद सही हों और उनकी बात ठीक नहीं हो तब बोलना तो पड़ेगा न?

**दादाश्री :** 'तू सही है' उसका प्रमाण क्या है? तू ही न्यायाधीश, तू ही वकील और तू ही अभियुक्त। अतः 'मैं सही हूँ' ऐसा न्याय करती है। खुद ही वकील, खुद अभियुक्त और खुद ही जज। वकील कहता है, 'सभी करते हैं, इसलिए हमें भी ऐसा ही करना पड़ेगा।' वकील तो उल्टा सिखाता है। 'तू सही है' उसका प्रमाण क्या है? और 'पति सही है' उसका प्रमाण क्या है? यह खुद का न्याय वह एक्ज़ेक्ट (यर्थाथ) न्याय होता है या खुद की समझ के अनुसार होगा?

**प्रश्नकर्ता :** खुद की समझ के अनुसार, इसलिए फिर टकराव हो जाता है? यानी बात झूठी है, क्या ऐसा मान लेना है? हर बार तो झूठी नहीं होती न?

**दादाश्री :** हर बार झूठ ही। टकराव क्यों हुआ?

### 'मत' जाने से, टले मतभेद

**प्रश्नकर्ता :** विचार अलग होना, इसका मतलब?

**दादाश्री :** विचार अलग क्यों हुए? नासमझी है, अक़ल नहीं है इसलिए। उन्हें दूध पीना हो और तू कहे, 'नहीं, दूध नहीं पीना। यह दही ले लीजिए।' यदि उनकी प्रकृति को दूध रास आता हो तो उन्हें कहना कि 'लीजिए दूध देती हूँ।' तेरी प्रकृति को दही रास आता हो तो दही खा ले। प्रकृति अलग, सबकी बात अलग। लेकिन अगर तू कहे कि 'आपको दही खाना ही पड़ेगा, अवश्य।' आपको क्या लगता है? 'आप बाल मत कटवाइए, मेरे जैसे लंबे बाल रखिए' तो क्या चलेगा? क्या सही है? उन्हें, हमें

ऐसा भी नहीं कहना चाहिए कि मैं कटवा रही हूँ, और आप भी कटवाईए। हर एक के तरीके से, न्याय रीति के अनुसार होना चाहिए, समझदारी सहित होना चाहिए।

घर में मतभेद और झंझट न हों, कम हो जाए, ऐसा रास्ता खोज निकालो।

इसका उपाय इतना ही है कि मैं अपने मत (राय) को ही निकाल दूँ तो मतभेद नहीं होगा। मेरा कोई मत ही नहीं। जो आपका मत वही मेरा मत।

### टकराव का कारण अज्ञानता

**प्रश्नकर्ता :** जीवन में स्वभाव नहीं मिलते इसीलिए टकराव होता है न?

**दादाश्री :** टकराव होता है, उसी का नाम संसार है!

**प्रश्नकर्ता :** टकराव होने का कारण क्या है?

**दादाश्री :** अज्ञानता।

**प्रश्नकर्ता :** सिर्फ सेठ के साथ ही टकराव होता है ऐसा नहीं है, सबके साथ होता है, उसका क्या?

**दादाश्री :** हाँ, सबके साथ होता है। अरे! इस दीवार के साथ भी होता है!

**प्रश्नकर्ता :** उसका रास्ता क्या होगा?

**दादाश्री :** हम बताते हैं, फिर दीवार के साथ भी टकराव नहीं होगा। इस दीवार के साथ टकराता है उसमें किसका दोष? जिसे चोट लगी उसका दोष, उसमें दीवार क्या करे? चीकनी मिट्टी आए और आप फिसल जाएँ उसमें भूल आपकी है, चीकनी मिट्टी तो निमित्त है। आपको निमित्त को समझकर अंदर उँगलियाँ गड़ा देनी पड़ेंगी। चीकनी मिट्टी तो होती ही है, और फिसला देना, वह तो उसका स्वभाव ही है।

### एडजस्ट एवरीव्हेर

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन कलह खड़ा होने का कारण क्या है, क्या स्वभाव नहीं मिलता, इसलिए?

**दादाश्री :** अज्ञानता है इसलिए। संसार वही है जहाँ किसी का किसी से स्वभाव मिलता ही नहीं। यह 'ज्ञान' मिले उसका एक ही रास्ता है, 'एडजस्ट एवरीव्हेर'। कोई तुझे मारे फिर भी तुझे उसके साथ 'एडजस्ट' हो जाना है।

सबसे बड़ा दुःख किसका है? 'डिसएडजस्टमेन्ट' का, वहाँ एडजस्ट एवरीव्हेर करें, तो क्या हर्ज है।

**प्रश्नकर्ता :** उसमें तो पुरुषार्थ चाहिए।

**दादाश्री :** कुछ भी पुरुषार्थ नहीं, मेरी आज्ञा पालनी है कि 'दादा' ने कहा है कि 'एडजस्ट एवरीव्हेर।' तो एडजस्ट होता रहेगा। बीवी कहे कि 'आप चोर हो।' तो कहना कि 'यु आर करेक्ट।' (आप सही हो) और थोड़ी देर बाद वह कहे कि 'नहीं, आपने चोरी नहीं की है।' तब भी, 'यु आर करेक्ट,' कहना।

जो काम जल्दी पूरा करना हो उसे क्या करना पड़ता है? एडजस्ट होकर छोटा कर देना चाहिए, नहीं तो खिंचता ही जाएगा या नहीं खिंचेगा?

बीवी के साथ झगड़ा करें तो क्या रात को नींद आएगी? और सुबह नाश्ता भी अच्छा नहीं मिलेगा।

### बच्चों सीखते हैं माँ-बाप को देखकर

**प्रश्नकर्ता :** पति-पत्नी के झगड़े से बच्चों पर क्या असर होता है?

**दादाश्री :** ओहोहो! बहुत खराब असर होता है। मन में नोंध (अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना, नोट करना) करते हैं इसकी।

नोटेड इट्स कन्टेन्ट्स (उस चीज़ की नोंध ली)। घर में ऐसी लड़ाई देखकर फिर मन में रख लेते हैं। फिर बाद में जब बड़ा हो जाता है तब वापस करता है!

बच्चे अच्छे बनें और संस्कारी बनें, वही अपना रास्ता। बच्चों को जो पसंद नहीं हो, वह कार्य नहीं करना चाहिए। बच्चों से पूछना चाहिए कि 'हम दोनों झगड़ते हैं तो क्या तुम लोगों को पसंद है?' तब वे कहें 'नहीं पसंद।' तो फिर हमें बंद कर देना चाहिए। बच्चे यदि माँ-बाप को अच्छा देखें न, तो बहुत अच्छे बन जाते हैं। उन्हें सिखाना नहीं पड़ता। संस्कार देखकर संस्कार सीख जाते हैं। बच्चे अपना कुछ भी गलत न देखें, ऐसा बर्ताव होना चाहिए। बच्चे संस्कारी होने चाहिए।

अतः जीवन कुछ तो सुधारो, अपने बच्चे सुधरें ऐसा तो कुछ करिए। निश्चय करोगे तो हो जाएगा। आप निश्चय करो कि मुझे ऐसा करना है, तो सभीकुछ हो सकता है, ऐसा है।

### नियम रखो घर में, क्लेश नहीं

यदि क्लेश आपको करना हो तो बाहर जाकर कर लेना चाहिए। घर में यदि झगड़ा करना हो, तब उस दिन घर के बजाय बगीचे में जाकर खूब लड़कर घर आना चाहिए लेकिन घर में 'अपने रूम में नहीं लड़ना है' ऐसा नियम बनाना चाहिए। किसी दिन आपको लड़ने का शौक हो जाए तो बीवी से आप कहना कि चलो, आज बगीचे में खूब नाश्ता-पानी करके, खूब झगड़ा करें। लोग बीच-बचाव के लिए आ जाएँ ऐसा झगड़ा करना, लेकिन घर में झगड़ा नहीं होना चाहिए। जहाँ क्लेश होता है वहाँ भगवान नहीं रहते, भगवान चले जाते हैं। भगवान ने क्या कहा है? भक्त के वहाँ क्लेश नहीं होना चाहिए। परोक्ष भक्ति करनेवाले को 'भक्त' कहा है और प्रत्यक्ष भक्ति करनेवाले को भगवान ने 'ज्ञानी' कहा है, वहाँ तो क्लेश होगा ही कैसे? बल्कि समाधि होती है!

### घर में चलण छोड़ना तो पड़ेगा न?

घर में आपको अपना चलण (वर्चस्व, सत्ता) नहीं रखना चाहिए। जो व्यक्ति चलण रखता है उसे भटकना पड़ता है। हमने भी हीरा बा से कह दिया था कि 'हम खोटा सिक्का हैं। हमें भटकना नहीं पुसाएगा न!' नहीं चलनेवाला सिक्का हो उसका क्या करते हैं? उसे भगवान के पास बैठे रहना होता है। घर में अपना चलण चलाने जाओगे, तो टकराव होगा न? हमें तो अब 'समभाव से निकाल' करना है। घर में पत्नी के साथ 'फ्रेन्ड' (मित्र) की तरह रहना चाहिए। वे आपकी 'फ्रेन्ड' और आप उनके 'फ्रेन्ड'। और यहाँ कोई नोंध नहीं करता कि चलण तेरा था या उनका था। म्युनिसिपालिटी में नोट नहीं करते और भगवान के वहाँ भी नोट नहीं होता। आपको नाशते से लेना-देना है या चलण से? इसलिए किस रास्ते नाश्ता अच्छा मिलेगा वह ढूँढ निकालो। यदि म्युनिसिपालिटीवाले नोट करके रखते हों कि घर में किसका चलण है, तो मैं भी एडजस्ट नहीं होता। यह तो कोई बाप भी नोट नहीं करता!

आपके पैर दुःखते हों और बीवी पैर दबा रही हो, उस समय कोई आए और यह देखकर कहे कि 'ओहोहो! आपका तो घर में चलण बहुत अच्छा है।' तब आप कहना कि 'नहीं, चलण उनका ही है।' और यदि आप कहो कि 'हाँ, हमारा ही चलण है,' तो वह पैर दबाना छोड़ देगी। उससे बेहतर तो आप कहना कि 'नहीं, उनका ही चलण है।'

**प्रश्नकर्ता :** उसे मक्खन लगाना नहीं कहेंगे?

**दादाश्री :** नहीं, वह स्ट्रेइट वे (सीधा) कहलाता है, और दूसरे सब टेढ़े-मेढ़े रास्ते कहलाते हैं। इस दूषमकाल में सुखी होने का, मैं कहता हूँ वह, अलग रास्ता है। मैं इस काल के लिए कह रहा हूँ। आप अपना नाश्ता क्यों बिगाड़ें? सुबह में नाश्ता बिगड़े, दोपहर में भी बिगड़े, सारा दिन बिगड़ेगा!

### समाधानकारक ज्ञान से मतभेद नहीं पड़ता

हम जो ज्ञान देते हैं न वह सर्व समाधानकारक ज्ञान है। इसलिए कभी भी मतभेद नहीं पड़ते। समाधान हो ही जाना चाहिए। किसी समय पर, एट एनी स्टेज (किसी भी दशा में), किसी भी जगह पर समाधान हो ही जाना चाहिए। इस जगत् में मेरा किसी के साथ, किसी भी जगह पर मतभेद पड़ता ही नहीं है। यदि मुझे गाली दें कि 'आप चोर हो,' तो भी मेरे से मतभेद नहीं पड़ता। क्योंकि वह अपनी दृष्टि से बोल रहा है बेचारा। उसकी कुछ तो दृष्टि है। कोई गप्प नहीं लगा सकता। गप्प मारना वह भी दृष्टि है। वह अपने मन में ऐसा मानता है कि 'मैं गप्प लगा रहा हूँ' लेकिन उसे किसी न किसी दृष्टि का आधार है। इसलिए हमें उसके साथ मतभेद नहीं पड़ता। मतभेद पड़ना वह तो कमजोरी कहलाती है, वीकनेस कहलाती है। वह सारी वीकनेस चली जानी चाहिए।

### व्यवहार सुधारें, समझदारी से

घर के सभी लोगों के साथ, 'समभाव से निकाल' करना। नहीं भाए, घर में ऐसा भोजन थाली में आए, वहाँ 'समभाव से निकाल' करना। किसी को परेशान मत करना, जो थाली में आए, वह खाना। जो सामने आया वह संयोग है और भगवान ने कहा है कि संयोग को धक्का मारेगा तो वह धक्का तुझे लगेगा! इसलिए नहीं भाए, ऐसी चीज़ परोसी हो, फिर भी हम उसमें से दो चीज़ें (कौर) खा लेते हैं। नहीं खाएँ, तो दो लोगों के साथ झगड़े होंगे। एक तो जो लाया, जिसने बनाया, उसके साथ झंझट होगी, उसे तिरस्कार लगेगा, और दूसरी तरफ खाने की चीज़ के साथ। खाने की चीज़ कहती है कि 'मैंने क्या गुनाह किया? मैं तेरे पास आई हूँ और तू मेरा अपमान किसलिए करता है? तुझे ठीक लगे उतना ले, लेकिन अपमान मत करना मेरा।' अब क्या उसे हमें मान नहीं देना चाहिए? हमें तो कोई दे जाए,

तब भी हम उसे मान देते हैं। क्योंकि एक तो मिलता नहीं है और मिल जाए तो मान देना पड़ता है। यह खाने की चीज़ दी और उसकी आपने कमी निकाली तो इससे सुख घटेगा या बढ़ेगा?

**प्रश्नकर्ता :** घटेगा।

**दादाश्री :** जिसमें घाटे वह व्यापार तो नहीं करोगे न? जिससे सुख घटे ऐसा व्यापार ही नहीं करना चाहिए न? मुझे तो बहुत बार नहीं भाती हो ऐसी सब्जी हो, वह खा लेता हूँ और ऊपर से कहता हूँ कि आज की सब्जी बहुत अच्छी है!

**प्रश्नकर्ता :** वह द्रोह नहीं कहलाता? न भाता हो और हम कहें कि भाता है, तो वह गलत तरह से मन को मनाना नहीं हुआ?

**दादाश्री :** गलत तरह से मन को मनाना नहीं है। एक तो 'भाता है' ऐसा कहें तो अपने गले उतरेगा। 'नहीं भाता' कहा तो फिर सब्जी को गुस्सा चढ़ेगा। बनानेवाले को गुस्सा चढ़ेगा। और घर के बच्चे क्या समझेंगे कि ये दखलवाले व्यक्ति हमेशा ऐसा ही किया करते हैं! घर के बच्चे अपनी आबरू समझ लेते हैं।

हमारे घर में भी कोई नहीं जानता कि 'दादा' को यह नहीं भाता या भाता है। यह भोजन बनाना क्या बनानेवाले के हाथ का खेल है? वह तो खानेवाले के 'व्यवस्थित' के हिसाब से थाली में आता है, उसमें दखल नहीं करनी चाहिए।

अरे, कई बार तो चाय में शक्कर नहीं हो न, फिर भी हम बोले नहीं हैं। तब लोग कहते हैं कि 'ऐसा करेंगे न, तो घर में सबकुछ बिगड़ जाएगा।' मैंने कहा कि 'आप कल देखना न?' तब फिर दूसरे दिन कहती हैं कि, 'कल चाय में शक्कर नहीं थी, फिर भी आपने हमें कुछ कहा नहीं?' मैंने कहा कि 'मुझे कहने की क्या ज़रूरत थी? आपको भी पता चलेगा ही न! आप नहीं पीती तो मुझे कहने की



ज़रूरत पड़ती। आप पीती हो, फिर मुझे कहने की क्या ज़रूरत?!

### तरछोड़ पहुँचती है भगवान को

घर में किसी को भी, पत्नी को, छोटी बच्ची को, किसी भी जीव को तरछोड़ (तिरस्कार सहित दुत्कारना) लगाकर मोक्ष में नहीं जा सकते। ज़रा-सी भी तरछोड़ लगे, तो वह मोक्ष का मार्ग नहीं है।

वह किस को तरछोड़ मारते हैं? वह सामनेवाले व्यक्ति को नहीं मारते बल्कि (उसके भीतर बैठे हुए) भगवान को मारते हैं। इसलिए आप यहाँ जो कुछ भी करते हो, जो भी गालियाँ देते हो, वह भगवान को ही पहुँचता है, उस व्यक्ति को नहीं पहुँचता। यहाँ के सभी, संसार के सभी परिणाम भगवान स्वीकारते हैं। अतः वे परिणाम ऐसे लाना कि यदि भगवान स्वीकार करें, तो वहाँ अपना खराब न दिखें।

किसी को ज़रा सा भी दुःख नहीं हो, वह आखरी 'लाइट' (प्रकाश) कहलाती है। विरोधी को भी शांति हो। अगर अपना विरोधी हो, तो वह भी ऐसा कहे कि 'भाई, इनका और मेरा मतभेद है, लेकिन इनके प्रति मुझे इज्जत है, आदर है' ऐसा कहे आखिर में।

### डिसएडजस्टमेन्ट से नुकसान किसे?

**प्रश्नकर्ता :** अब तो जीवन में शांति का सरल मार्ग चाहिए।

**दादाश्री :** एक ही शब्द जीवन में उतारोगे ठीक से, एक्जेक्ट?

**प्रश्नकर्ता :** एक्जेक्ट, हाँ।

**दादाश्री :** 'एडजस्ट एवरीव्हेर' इतना ही शब्द यदि आप जीवन में उतार लोगे तो बहुत हो गया। आपको अपने आप शांति हो जाएगी। शुरूआत में

छः महीनों तक अड़चनें आएँगी, बाद में अपने आप ही शांति हो जाएगी। पहले छः महीनों तक पिछले रिएक्शन (प्रतिक्रिया) आएँगे, देर से शुरूआत की इस वजह से। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! इस कलियुग के ऐसे भयंकर काल में यदि एडजस्ट नहीं हुए न, तो खत्म हो जाओगे।

ये तो रिलेटिव संबंध है। इन्हें सुधारने की ज़रूरत नहीं है। उस बहन को भी मैंने कहा, 'इसे सुधारना चाहती हो? क्या ज़रूरत है सुधारने की? जैसा माल हो वैसा ही हमें चला लेना है। एडजस्ट एवरीव्हेअर।' पाँचवे आरे (दुषमकाल) में एडजस्ट एवरीव्हेअर होना चाहिए और अगर डिसएडजस्ट हुए तो मार खाकर मर जाओगे।

### डोन्ट सी लॉज़, प्लीज़ सेटल

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार में रहना है तो एडजस्ट एकपक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

**दादाश्री :** व्यवहार तो उसे कहते हैं कि 'एडजस्ट' हो जाएँ यानी कि पड़ोसी भी कहें कि 'सब घर में झगड़े हैं, लेकिन इस घर में झगड़ा नहीं है।' वैसा व्यवहार सबसे अच्छा माना जाता है। जिसके साथ रास नहीं आए, वहीं पर शक्ति विकसित करनी है, रास आए वहाँ तो शक्ति है ही। नहीं रास आए वह तो कमज़ोरी है। मुझे सबके साथ कैसे रास आ जाता है? जितने एडजस्टमेन्ट्स लेंगे उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ टूटती जाएँगी। सच्ची समझ तो, दूसरी सभी समझ को ताले लगेंगे तभी आएगी।

'ज्ञानी' तो, यदि सामनेवाला टेढ़ा हो तब भी उसके साथ 'एडजस्ट' हो जाते हैं। 'ज्ञानीपुरुष' को देखकर चलो तो सभी तरह के 'एडजस्टमेन्ट्स' करने आ जाएँगे। उसके पीछे साइन्स क्या कहता है कि 'वीतराग हो जाओ, राग-द्वेष मत करो।' यह तो अंदर कुछ आसक्ति रह जाती है, इसलिए मार पड़ती

हैं। इस व्यवहार में एकपक्षीय, निःस्पृह हो जाँएँ तो टेढ़े कहलाएँगे। जब हमें ज़रूरत हो, तब सामनेवाला टेढ़ा हो फिर भी उसे मना लेना पड़ता है। स्टेशन पर मजदूर चाहिए तो वह आनाकानी कर रहा हो, तब भी उसे चार आने कम-ज्यादा करके भी मना लेना पड़ता है, और नहीं मनाओगे तो वह बैग आपके सिर पर ही डालेगा न?

‘डोन्ट सी लॉज़, प्लीज़ सेटल’ (कानून मत देखो, प्लीज़ समाधान करो), सामनेवाले को ‘सेटलमेन्ट’ (समाधान) लेने के लिए कहना, ‘आप ऐसा करो, वैसा करो’, ऐसा कहने के लिए टाइम ही कहाँ होता है? सामनेवाले की सौ भूलें हों, तब भी हमें तो खुद की ही भूल कहकर आगे निकल जाना है। इस काल में लॉ (कानून) तो देखा जाता होगा? यह तो अंतिम स्तर पर आ गया है। जहाँ देखो वहाँ दौड़मदौड़ और भागम्भाग। लोग उलझ गए हैं! घर जाए तो वाइफ चिल्लाती है, बच्चे चिल्लाते हैं, नौकरी पर जाए तो सेठ चिल्लाता है, गाड़ी में जाए तो भीड़ में धक्के खाता है! कहीं भी चैन नहीं है। चैन तो चाहिए न? कोई लड़ने लगे तो हमें उसके ऊपर दया रखनी चाहिए कि अहोहो! इसे कितनी अधिक बेचैनी होगी कि वह लड़ पड़ता है! बेचैन हो जाते हैं, वे सब कमज़ोर हैं।

### समझिए एडजस्टमेन्ट के विज्ञान को

**प्रश्नकर्ता :** बहुत बार ऐसा होता है कि एक समय में दो लोगों के साथ एक ही बात पर ‘एडजस्टमेन्ट’ लेना होता है, तो एक ही समय में सभी ओर किस तरह ले सकते हैं?

**दादाश्री :** दोनों के साथ लिया जा सकता है। अरे, सात लोगों के साथ भी लेना हो, तब भी लिया जा सकता है। एक पूछे, ‘मेरा क्या किया?’ तब कहें, ‘हाँ भाई, तेरे कहे अनुसार करूँगा।’ दूसरे को भी ऐसा कहेंगे, आप कहोगे वैसा करूँगा। ‘व्यवस्थित’

के बाहर होनेवाला नहीं है। इसलिए चाहे जैसे झगड़ा खड़ा मत करना।

यह तो सही-गलत कहने से भूत परेशान करते हैं। हमें तो दोनों को एक सरीखा कर देना है। इसे अच्छा कहा इसलिए दूसरा गलत हो गया, इसलिए फिर वह परेशान करता है। लेकिन दोनों का मिक्चर कर डालें इससे फिर असर नहीं रहेगा। ‘एडजस्ट ऐवरीव्हेर’ की हमने खोज की है। सही कह रहा हो उसके साथ और गलत कह रहा हो उसके साथ ‘एडजस्ट’ हो जा। हमें कोई कहे कि ‘आपमें अक्रल नहीं है’, तो हम उसके साथ तुरंत ‘एडजस्ट’ हो जाएँगे और उसे कहेंगे कि ‘यह तो पहले से ही नहीं थी! तू अभी कहाँ खोजने आया है? तुझे तो आज उसका पता चला, लेकिन मैं तो बचपन से ही जानता हूँ।’ ऐसा कहें तो झंझट मिट गई न! फिर वह हमारे पास अक्रल ढूँढने आएगा ही नहीं। ऐसा नहीं करें तो ‘अपने घर’ (मोक्ष) कब पहुँच पाएँगे?

हम यह सरल और सीधा रास्ता बता देते हैं और ये टकराव क्या रोज़-रोज़ होते हैं? वह तो जब अपने कर्म का उदय हो तब होता है, उतना ही हमें ‘एडजस्ट’ करना है। घर में पत्नी के साथ झगड़ा हुआ हो तो झगड़ा होने के बाद पत्नी को होटल में ले जाकर, खाना खिलाकर खुश कर देना, अब ताँता (तंत) नहीं रहना चाहिए।

‘एडजस्टमेन्ट’ को हम न्याय कहते हैं। आग्रह-दुराग्रह, वह कोई न्याय नहीं कहलाता। किसी भी प्रकार का आग्रह न्याय नहीं है। हम किसी का आग्रह नहीं पकड़ते। जिस पानी से मूँग गलें उससे गला लें, अंत में गटर के पानी से भी गला लें!

यह ‘एडजस्ट एवरीव्हेर’ नहीं होगा तो पागल हो जाओगे सब। सामनेवाले को छेड़ते रहोगे, उससे ही वे पागल होते हैं। इस कुत्ते को एक बार छेड़ें,

दूसरी बार, तीसरी बार छेड़ें तब तक वह हमारी आबरू रखता है, लेकिन फिर बहुत छेड़छाड़ करें तो वह भी काट लेता है। वह भी समझ जाता है कि यह रोज़ छेड़ता है, यह नालायक है। यह बात समझने जैसी है। कुछ भी झंझट करना नहीं है, एडजस्ट एवरीव्हेर।

### एडजस्टमेंट का अद्भुत विज्ञान

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाले को समझाने के लिए मैंने अपना पुरुषार्थ किया, फिर वह समझे-ना समझे, क्या वह उसका पुरुषार्थ है?

**दादाश्री :** हम उसे समझाएँ, फिर भी वह नहीं समझे तो आप इतना कहना कि 'हे दादा भगवान! इसे सदबुद्धि दीजिए।' इतना कहना चाहिए। उसे बीच में नहीं लटका सकते, यह कोई गप्प नहीं है। यह 'दादाजी' का 'एडजस्टमेंट' का विज्ञान है, गज़ब का है यह 'एडजस्टमेंट'। और जहाँ 'एडजस्ट' नहीं होते, वहाँ उसका स्वाद तो आता ही होगा न? 'डिसएडजस्टमेंट' ही मूर्खता है। क्योंकि वह समझता है कि मैं अपना स्वामित्व नहीं छोड़ूँगा और मेरा ही वर्चस्व होना चाहिए, ऐसा मानने से सारी जिंदगी भूखा मरेगा और एक दिन थाली में 'पोइजन' (ज़हर) आ गिरेगा! सहजरूप से जो चलता है, उसे चलने दो! यह तो कलियुग है। वातावरण ही कैसा है! इसलिए जब बीवी कहे कि 'आप नालायक हैं', तो कहना, 'बहुत अच्छा।'

अतः 'एडजस्ट' हो जाना जगत् में, क्योंकि हर एक चीज़ का 'एन्ड' (अंत) होता है और यदि कभी वह लंबे समय तक चले तो भी आप उसे 'हेल्प' नहीं कर रहे, बल्कि ज़्यादा नुकसान कर रहे हो। खुद अपना नुकसान करते हो और सामनेवाला का भी नुकसान होता है। उसे कौन सुधार सकता है? जो सुधरा हुआ हो वही सुधार सकता है। यदि खुद का ही ठिकाना नहीं हो, तो सामनेवाले को कैसे सुधार सकता है?

### एडजस्ट कैसे होना चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** एडजस्ट कैसे होना चाहिए, यह ज़रा समझाइए।

**दादाश्री :** हमें किसी कारणवश देर हो गई, और पत्नी कुछ उल्टा-सुल्टा बोलने लगे कि, 'इतनी देर से आते हो? मुझे ऐसा नहीं चलेगा।' और जैसा-तैसा कहे... उसका दिमाग़ फिर गया, तब आप कहना कि 'हाँ, तेरी बात सही है, तू कहे तो वापस चला जाऊँ और तू कहे तो अंदर आकर बैठूँ।' तब वह कहे, 'नहीं, वापस मत जाना। यहाँ सो जाओ चुपचाप।' लेकिन फिर पूछो, 'तू कहे तो खाऊँ, वरना सो जाऊँ।' तब वह कहे, 'नहीं, खा लो।' तब आपको उसका कहा मानकर खा लेना चाहिए। अर्थात् एडजस्ट हो गए। फिर सुबह फर्स्ट क्लास चाय देगी और अगर धमकाया तो फिर चाय का कप पटककर देगी। वैसा तीन दिन तक चलता ही रहेगा।

### जहाँ प्रेम है, वहाँ एडजस्टमेंट होगा ही

यदि आपको प्रेम है तो एडजस्टमेंट होगा ही। प्रेम से सब कहें। जो प्रेमवाला इंसान है न, वह सबकुछ कह सकता है। अतः हम क्या कहना चाहते हैं? अगर प्रेमस्वरूप बन जाओ तो यह जगत् आपका ही है। जहाँ बैर हो, वहाँ धीरे-धीरे बैर को प्रेमस्वरूप कर दो। बैर के कारण ही यह सारा जगत् ऐसा 'रफ' दिखाई देता है। देखो न, (यह) प्रेमस्वरूप! किसी को ज़रा सा भी बुरा नहीं लगता और सब कितना आनंद में हैं।

**प्रश्नकर्ता :** क्या (उसमें) अहंकार आड़े आता है?

**दादाश्री :** हाँ, वही न! अहंकार की ही सारी परेशानी है न! मतभेद से समाधान नहीं आता। मतभेद पसंद नहीं है फिर भी मतभेद हो जाते हैं न? यदि सामनेवाला ज़्यादा खींचा-तानी (आग्रह) करे तो हमें छोड़ देना है और ओढ़कर सो जाना चाहिए।

अगर नहीं छोड़ेंगे और दोनों खींचते रहोगे तो दोनों को नींद नहीं आएगी और पूरी रात खराब होगी। व्यवहार में, व्यापार में, साझेदारी में कैसे सँभालकर चलते हैं! तो क्या हमें इस संसार की साझेदारी को नहीं सँभाल लेना चाहिए?

### पॉज़िटिव रास्ता पुरुषार्थ का

**प्रश्नकर्ता ( बहन ) :** आपने तो इन पुरुषों को यह बताया कि आपको नॉबेल (उदार) होकर कहना है कि 'भाई, यह मेरी गलती है। फिर, आधे घंटे बाद पूछें तो भी वापस वैसा ही कहना।' इन लोगों को कितना सुंदर रास्ता बताया! हम बहनों को भी बताइए न, ताकि हम भी वैसा पुरुषार्थ कर सकें? हमें तंत रहे ही नहीं, ऐसा रास्ता बताइए न!

**दादाश्री :** आपको कह देना चाहिए कि... 'अच्छा है। आप तो महान पुरुष हो कि आप यह सब एक्सेप्ट कर लेते हो, लेकिन हम से एक्सेप्ट नहीं हो पाता,' बस तो हो गया। धुल जाएगा। 'आप तो महान पुरुष हो, अतः मुझे आपको चाय पिलानी चाहिए।' चाय-वाय बनाकर दे देना। उनकी महानता ज़ाहिर करनी चाहिए।

### शुद्ध तो करना ही पड़ेगा

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, ये बहन कहती हैं कि फिर अब हमें पुरुषों को कुछ भी टोकना या कुछ कहना नहीं है। क्या हमें ऐसा परुषार्थ करना है?

**दादाश्री :** कहना न! उसके बिना *निकाल* कैसे होगा?

**प्रश्नकर्ता :** बहन ऐसा कहती हैं कि पुरुष तो अपनी नॉबेलिटी दिखाकर, छूट जाएगा लेकिन इसमें अब स्त्री ऐसी बकबक और किच-किच करती है तो वह कितने कर्म, दोष बाँधती है?

**दादाश्री :** कुछ भी दोष नहीं बाँधती उसे फिर से यह किताब पलटनी पड़ेगी। जो केस नहीं

निपटायी हो दुबारा उसे शुद्ध तो करना पड़ेगा न! अर्थात् दोष को दुबारा शुद्ध तो करना पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** उसे करना नहीं है फिर भी स्त्री अपने स्वभाव के कारण करती है। तब भी क्या उसे वापस याद करके प्रतिक्रमण करना पड़ेगा?

**दादाश्री :** याद करना मतलब उसे शुद्ध तो करना ही पड़ेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** जो स्त्री लेट गो (छोड़ देना) नहीं करती है, क्या उसे कभी न कभी वापस धोना ही पड़ेगा?

**दादाश्री :** और कोई चारा ही नहीं है न! यह तो न्याय है, न्याय तो राजा को भी नहीं छोड़ता और रानी को भी नहीं छोड़ता। न्यायाधीश को भी नहीं छोड़ता और गुनहगार को भी नहीं छोड़ता, किसी को भी नहीं छोड़ता।

**प्रश्नकर्ता :** हम पति को भी टोक देते हैं तो क्या हम टोकना रोक सकेंगे?

**दादाश्री :** रोक सको तो अच्छा है। लेकिन रोक नहीं पाते न! अपनी भावना होनी चाहिए कि रुक जाए तो अच्छा है।

### सँभालिए डिपार्टमेन्ट खुद-खुद के

पुरुष को स्त्री की बात में हाथ नहीं डालना चाहिए और स्त्री को पुरुष की बात में हाथ नहीं डालना चाहिए। हर एक को अपने-अपने डिपार्टमेन्ट में ही रहना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** कौन सा है स्त्री का डिपार्टमेन्ट? किस-किसमें पुरुषों को हाथ नहीं डालना चाहिए?

**दादाश्री :** ऐसा है, खाना क्या पकाना, है? घर कैसे चलाना, वह सब स्त्री का डिपार्टमेन्ट है। गेहूँ कहाँ से लाती है, कहाँ से नहीं लाती आपको वह जानने की क्या ज़रूरत है? वह यदि आप से

कहती हों कि 'गेहूँ लाने में मुझे अड़चन पड़ रही है' तो वह बात अलग है। लेकिन यदि वह आपको कहती न हों, राशन बताती नहीं हों, तो आपको उस 'डिपार्टमेन्ट' में हाथ डालने की ज़रूरत ही क्या है? आज खीर बनाना, आज जलेबी बनाना, आपको ऐसा भी कहने की क्या ज़रूरत है? जब टाइम आएगा तब वह रखेगी। उनका 'डिपार्टमेन्ट,' वह उनका स्वतंत्र है। कभी बहुत इच्छा हुई हो तो कहना कि 'आज लड्डू बनाना।' कहने के लिए (मैं) मना नहीं करता, लेकिन दूसरी टेढ़ा-मेढ़ा, बेकार का शोर मचाएँ कि कढ़ी खारी हो गई, खारी हो गई, तो वह सब नासमझी है।

यह रेलवे लाइन चलती है, उसमें कितनी सारी कार्यवाही होती है! कितनी जगहों से टिप्पणी आती हैं, खबरें आती हैं, उनका पूरा 'डिपार्टमेन्ट' ही अलग। अब उसमें भी कभी खामी तो आती ही है न? वैसे ही 'वाइफ' के डिपार्टमेन्ट में कभी खामी आ भी जाए। अब आप यदि उनकी खामी निकालने जाएँ तो फिर वे आपकी खामी निकालेंगी, आप ऐसा नहीं करते, आप वैसा नहीं करते। ऐसा खत आया और वैसा किया आपने। यानी कि वह बैर वसूलती है। मैं आपकी कमी निकालूँ तो आप भी मेरी कमी निकालने के लिए बेताब रहते हैं! इसलिए खरा मनुष्य तो घर की बातों में हाथ ही न डाले। वह पुरुष कहलाता है। नहीं तो स्त्री जैसा होता है। कुछ लोग तो घर में जाकर मिर्ची के डिब्बे में देखते हैं कि दो महिने पहले मिर्ची लाए थे, वह इतनी जल्दी पूरी हो गई? अरे, मिर्ची देखता है तो कब पार आएगा? वह जिसका 'डिपार्टमेन्ट' हो, उसे चिंता नहीं होती? क्योंकि वस्तु तो खर्च होती रहती है और खरीदी भी जाती है। लेकिन यह तो बिना काम के ज़्यादा अक्रलमंद बनने जाता है! फिर पत्नी भी समझती है कि इनकी चवन्नी गिर गई है। माल कैसा है, वह स्त्री समझ जाती है। घोड़ी समझ जाती है कि ऊपर बैठनेवाला कैसा है, वैसे ही स्त्री सब

समझ जाती है। इसके बदले तो 'भाभो भारमां तो बहु लाजमां'। पुरुष गरिमा में नहीं रहे तो बहू किस तरह लाज में रहे? नियम और मर्यादा से ही व्यवहार शोभा देगा। मर्यादा पार मत करना और निर्मल रहना।

### एक दूसरे के खाते में दखल नहीं करें

**प्रश्नकर्ता (बहन) :** स्त्री को पुरुष की कौन-से मामलों में हाथ नहीं डालना चाहिए?

**दादाश्री :** पुरुष की किसी भी बात में दखल नहीं डालना चाहिए। दुकान में कितना माल लाए? कितना गया? आज देर से क्यों आए? उसे फिर कहना पड़ता है कि 'आज नौ बजे की गाड़ी चूक गया।' तब पत्नी कहेगी कि 'ऐसे कैसे घूमते हो कि गाड़ी चूक जाते हो?' तब फिर पति चिढ़ जाता है। उसके मन में होता है कि भगवान भी ऐसा पूछते तो उन्हें मारता। लेकिन यहाँ क्या करे अब? यानी बिना काम के दखल करते हैं। बासमती के चावल अच्छे पकाते हैं और फिर अंदर कंकड़ डालकर खाते हैं, उसमें क्या स्वाद आएगा? स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे को हेल्प करनी चाहिए। पति को चिंता-वरीज रहती हों, तो उसे किस प्रकार वह न हो, स्त्री को इस तरह से बोलना चाहिए। वैसे ही पति को भी पत्नी मुश्किल में न पड़े, ऐसा देखना चाहिए। पति को भी समझना चाहिए कि स्त्री को बच्चे घर पर कितना परेशान करते होंगे। घर में टूट-फूट हो तो पुरुष को चिल्लाना नहीं चाहिए। लेकिन फिर भी लोग (पति) चिल्लाते हैं कि पिछली बार एक दर्जन सबसे अच्छे कप-प्लेट लेकर आया था, आपने वे सब क्यों तोड़ डाले? सब खत्म कर दिया! इससे पत्नी के मन में लगता है कि 'क्या मैंने तोड़ डाले? मुझे क्या वे खा जाने थे? टूट गए सो टूट गए, उसमें मैं क्या करूँ? मी काय करूँ?' कहेगी। अब वहाँ भी लड़ई-झगड़ा। जहाँ कुछ लेना नहीं और देना नहीं। जहाँ लड़ने का कोई कारण ही नहीं, वहाँ भी क्यों लड़ना?

## दादावाणी

हमारे और हीरा बा के बीच कोई मतभेद ही नहीं पड़ता था। हमने उनके काम में हाथ ही नहीं डाला कभी भी। उनके हाथ से पैसे गिर गए हों, हमने देखे हों, फिर भी हम ऐसा नहीं कहते कि 'आपके पैसे गिर गए।' वह देखा या नहीं देखा? घर की किसी बात में हम हस्तक्षेप नहीं करते थे। वह भी हमारी किसी बात में दखल नहीं करती थी। हम कितने बजे उठते हैं, कितने बजे नहाते हैं, कब आते हैं, कब जाते हैं, ऐसे हमारे किसी मामले में वह हमें कभी भी नहीं पूछती थी। और किसी दिन हमें कहें कि 'आज जल्दी नहा लेना।' तो हम तुरंत धोती मँगवाकर नहा लेते थे। अरे, अपने आप ही तौलिया लेकर नहा लेते थे। क्योंकि हम समझते थे कि ये 'लाल झंडी' दिखा रही हैं, इसलिए कोई डर होगा! पानी नहीं आनेवाला हो या ऐसा कुछ भी होगा तभी वे हमें जल्दी नहा लेने को कह रही है, यानी हम समझ जाते। इसलिए थोड़ा-थोड़ा व्यवहार में आप भी समझ लो न, कि किसी के काम में हाथ डालने जैसा नहीं है।

फोज़दार पकड़कर आपको ले जाए फिर वह जैसा कहे वैसा क्या आप नहीं करेंगे? जहाँ बिठाए वहाँ आप नहीं बैठेंगे क्या? आप समझते हो कि यहाँ हूँ तब तक इस झंझट में हूँ, उस प्रकार यह संसार भी फोज़दारी ही है। इसलिए उसमें भी सरल हो जाना चाहिए।

### घर में रहें गेस्ट बनकर

घर पर भोजन की थाली आती है या नहीं आती?

**प्रश्नकर्ता :** आती है।

**दादाश्री :** भोजन चाहिए तो मिल जाता है, पलंग चाहिए तो बिछा देते हैं, फिर क्या? और खटिया बिछाकर नहीं दें तो वह भी हमें खुद बिछा लेना चाहिए और निपटारा लाना चाहिए। बात को

शांति से समझना चाहिए। आपके संसार के हिताहित की बात कोई 'गीता' में थोड़ी न लिखी होती है? वह तो खुद ही समझनी पड़ेगी न?

'हज़बेन्ड' मतलब 'वाइफ' की भी 'वाइफ' (पति यानी पत्नी की पत्नी) यह तो लोग पति बन बैठते हैं? अरे, 'वाइफ' क्या पति बन बैठनेवाली है? अपने घर में ज़ोर से आवाज़ नहीं होना चाहिए। यह कोई क्या 'लाउड स्पीकर' है? यह तो यहाँ ऐसे चिल्लाएगा जो गली के नुक्कड़ तक सुनाई देता है। घर में 'गेस्ट' की तरह रहें। हम भी घर में 'गेस्ट' (मेहमान) की तरह रहते हैं। यदि कुदरत के 'गेस्ट' की तरह आपको सुख न आता तो फिर ससुराल में क्या सुख आनेवाला है?

### प्रतिक्रमण से साफ करो

**प्रश्नकर्ता :** हज़बेन्ड और वाइफ दो प्रकृति हों, तो उनमें से जिसे टोका-टोकी करनी के आदत पड़ गई हो, उस वक्त जिसने दादाजी का ज्ञान प्राप्त किया हुआ है, उसे तो मालूम है कि यह गाड़ी गलत रास्ते पर चल रही है, यह मुड़ जानी चाहिए। लेकिन अंदर आवरण इतना अधिक गाढ़ (जटिल) होता है, वह समझती है कि तू यह भूल कर रही है फिर भी वह करती ही है। कैसा है यह आवरण? और कर्म भी कैसे? उसे रोक सकते हैं क्या? क्या उस वक्त उसके पास सचमुच कोई ऐसी इन्स्टेन्ट (तुरंत) चाबी हैं? कि...

**दादाश्री :** 'व्यवस्थित' बदल सकता नहीं। फोटो खिंच चुका है। फोटो बन चुका है। अभी हमें ऐसा ज़रूर लगता है कि यह फोटो खींचने की ज़रूरत नहीं है लेकिन भाई, फोटो तो खिंच चुकी है न, इसलिए ऐसा हो जाता है!

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उस समय जो इमोशनल (भावुक) हो जाता है, वह सब बिगाड़ देता है। दादा के ज्ञान का क्रम भी बिगाड़ देता है, पाँच-

दस मिनट के लिए या एक घंटे के लिए या एकाध दिन के लिए। तब वह किस तरह के कर्म बाँधता है?

**दादाश्री :** वहाँ सब 'व्यवस्थित' है। फोटो खिंच चुका है अपनी इच्छा के विरुद्ध, फिर क्या?

**प्रश्नकर्ता :** क्या उसे अटकण (जो बंधनरूप हो जाए) कहते हैं?

**दादाश्री :** नहीं! उन फोटो को खींचते समय सावधानी नहीं रखी थी, इसलिए। अभी तो इस ज्ञान के कारण सावधान रहता है, वर्ना अभी भी सावधानी नहीं रहती।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर उसके प्रतिक्रमण करके धो डालना है?

**दादाश्री :** बस! और कुछ नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादाजी, उस समय बहुत दुःख होता है कि अरेरे....कितना बिगाड़ दिया!

**दादाश्री :** नहीं, नहीं कुछ भी नहीं बिगाड़ा।

**प्रश्नकर्ता :** क्या उस समय कुछ कर्म बाँध लेते हैं? क्या ऐसा करते समय वे लोग कर्म बाँधते हैं? आज यह सब जो डिस्चार्ज हो रहा है तब?

**दादाश्री :** नहीं, इससे तो उसे कोई कर्म नहीं बंधता। वह क्लिअरन्स (चोखा) नहीं हुआ होगा तो हमें दुबारा क्लिअरन्स करना पड़ेगा। क्लिअरन्स तो हमें करना ही पड़ेगा।

**प्रश्नकर्ता :** ये पहले जो फोटो खिंच चुके हैं, उनका आधार लेकर और भविष्य की जिंदगी में भी पूरे दिन ऐसा ही करता रहे कि फोटो खिंच चुकी है। तो फिर दूसरी गालियाँ देते ही रहें, झगड़ा करते ही रहें....

**दादाश्री :** नहीं, वह तो जो करता है उसे कह देना है कि 'भाई! क्यों ऐसा किया? अब प्रतिक्रमण करो।' प्रतिक्रमण किया तो हम मुक्त हो गए। अब अगर प्रतिक्रमण करोगे तो मुक्त हो जाओगा। वर्ना दुबारा उसे फाइल का समाधान लाना पड़ेगा।

जगत् बिल्कुल क्लिअर है। हमें क्लिअर रहना नहीं आता उसका क्या हो सकता है? जगत् क्या करे इसमें?

**सामनेवाला फोड़े लेकिन हमें सिलना है**

**प्रश्नकर्ता :** कभी-कभी तो मन दुःखी हो जाता है कि इन्होंने भी ज्ञान लिया है, हमने भी ज्ञान लिया है, फिर भी क्यों ऐसा होता है?

**दादाश्री :** ये सब तो कर्म के उदय हैं। ऐसे में हमें प्रतिक्रमण करना चाहिए। ये धक्के तो लगे बगैर रहेंगे नहीं। उनकी ऐसी इच्छा नहीं होती, फिर भी कर्म के धक्के लगते रहते हैं। कर्म भुगते बिना तो चारा ही नहीं है न!

**प्रश्नकर्ता :** मुझे ऐसा होता है कि 'उनके' लिए अच्छा करूँ लेकिन मुझसे बिगाड़ ही जाता है और मैं गलत साबित हो जाती हूँ।

**दादाश्री :** उसमें क्या हर्ज है? जो हुआ वही करेक्ट। जिसे अच्छा करना है, उसे कोई डर रखने की ज़रूरत नहीं है और जिसे खराब करना है, वह चाहे कितना भी डर रखे, तब भी उससे कोई फायदा नहीं है। इसलिए हमें अच्छा करना है, ऐसा तय करना है।

**प्रश्नकर्ता :** पहले मुझे बहुत डर लगता था, लेकिन अब डर नहीं लगता।

**दादाश्री :** लेकिन ऐसी बातें करने की भी ज़रूरत नहीं है, आपको प्रतिक्रमण करने हैं।

## दादावाणी

ये सभी रिलेटिव संबंध हैं, रियल संबंध नहीं हैं। प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो फट जाएँगे। प्रतिक्रमण का अर्थ क्या है। जोड़ना। सामनेवाला फाड़े और हम सिल दें तभी वह कपड़ा टिकेगा, लेकिन सामनेवाला फाड़े और हम भी फाड़ें तो क्या बचेगा?

**फाइल नहीं बल्कि, जागृति की कचाश बाधक है**

**प्रश्नकर्ता :** दादाजी, आपने यह ज्ञान दिया, अब नहीं बोलने की कला और सभी में शुद्धात्मा देखें और अंदर उन्हें नमस्कार करें, तो *चीकणी* (गाढ़ ऋणानुबंधवाले व्यक्ति) फाइल का *निकाल* हो जाएगा न?

**दादाश्री :** फाइल मतलब विचार आए बगैर रहेंगे नहीं और बोले बगैर भी रह नहीं सकेंगे। नहीं बोलने की कला वहाँ पर नहीं चलेगी।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन उसका कोई तरीका तो होगा न दादाजी?

**दादाश्री :** वह तो हमें नियम रखना है कि हमें बोलना नहीं है, फिर भी अगर बोल दिया, तो वह है फाइल की निशानी। फाइल जितनी *चीकणी* होगी, उतना बोलेंगे। वर्ना अगर आपकी धारणा के अनुसार, नहीं बोलना हो तो नहीं भी बोलें। वह फाइल जो *चीकणी* है, उसके साथ नहीं बोलना हो, फिर भी बोल देते हो। लेकिन यह नहीं बोलना है ऐसा तय रखना चाहिए। उसके लिए, हमें नहीं बोलना है, नहीं सोचना है या बर्ताव नहीं करना है, अपने मन में ऐसा तय करके उस फाइल का *निकाल* करना। ये फाइलें हैं। 'फाइल मुझे ऐसे बाधा डालती है' ऐसा नहीं बोलना चाहिए। फाइल का तो अपने आप *निकाल* हो ही जाएगा। बाधक क्या है? जागृति कच्ची रहे, वह बाधक है। फाइल का तो *निकाल* हो जाएगा। जो फाइलें आई हैं उनका छः या बारह महीनों में *निकाल* हो जाएगा। उस पर ज़्यादा ध्यान

मत देना। '*निकाल* करना है' ऐसा नक्की रखना, अतः जब भी वह मिले, तब '*निकाल* करना है,' ऐसा निश्चय हाज़िर रहेगा।

**इस ज्ञान का बल कैसा?**

फाइल मतलब जो विचित्र प्रकार का बोले। ऐसा विचित्र बोले कि हमारा सिर दुःखने लगे, सिर दर्द हो जाए। अब, वह ऐसा क्यों बोलती है? तो वह इसलिए कि वह फाइल है, *चीकणी फाइल* (गाढ़ ऋणानुबंधवाले व्यक्ति अथवा संयोग)। फिर मन में समझ जाए कि यह ज्ञान मिला है, इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए। नहीं तो चिपक जाएगा कि, 'मैं सही हूँ', ऐसा समझोगी न! यह तो ऐसा तुरंत समझ में आ जाता है कि 'मैं गलत हूँ', तुझे एक? घंटे के बाद समझ में आता है न कि यह भूल हो गई!

**प्रश्नकर्ता :** तुरंत पता चल जाता है।

**दादाश्री :** तुरंत! लो फिर, तब इस ज्ञान का बल कैसा है! यह ज्ञान भी कितना असरवाला है!

**हिसाब चुकाने के साधन हैं यहाँ**

पूरा जगत् हिसाब ही है सारा और हिसाब चुकाने के लिए अपने यहाँ आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान हैं। अन्य जगहों पर उनके पास हिसाब चुकाने का कोई साधन नहीं है। अपने यहाँ साधन हैं, आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान। आप थोड़ा बहुत चुकाने लगे हो क्या अब? हिसाब ही चुकाने हैं न? और क्या करना है?

किसी के हाथ में परेशान करने की भी सत्ता नहीं है और किसी के हाथ में सहन करने की भी सत्ता नहीं है। ये सब तो पुतले ही हैं, ये ही सब काम कर रहे हैं। अतः जब हम प्रतिक्रमण करते हैं तब पुतले अपने आप सीधे हो जाते हैं।



### निकाली व्यवहार का झटपट निबेड़ा लाओ न!

पहले यह व्यवहार सीखना है। व्यवहार की समझ के बिना तो लोग तरह-तरह के मार खाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अध्यात्म में तो आपकी बात के बारे में कुछ कहना ही नहीं है, लेकिन व्यवहार में भी आपकी बात 'टॉप' (उच्च) की बात है।

**दादाश्री :** ऐसा है न, कि व्यवहार में 'टोप' का समझे बिना कोई मोक्ष में नहीं गया है। चाहे जितना बारह लाख का आत्मज्ञान हो, लेकिन व्यवहार समझे बिना कोई मोक्ष में नहीं गया। क्योंकि व्यवहार ही छुड़वानेवाला है न? वह न छोड़े तो आप क्या करोगे? आप 'शुद्धात्मा' ही हो, लेकिन व्यवहार आपको छोड़े तब न? आप व्यवहार को उलझाते रहते हो। झटपट निबेड़ा लाओ न!

इन भाई से कहा हो कि 'जाओ, दुकान से आइस्क्रीम ले आओ।' लेकिन वह आधे रास्ते से ही वापस आ जाए। आप पूछो, 'क्यों?' तो वह कहे, 'रास्ते में गधा मिल गया इसलिए, अपशुकन हो गया।' अब इसे ऐसा उल्टा ज्ञान हुआ है, उसे हमें निकाल देना चाहिए न? उसे समझाना चाहिए कि 'भाई, गधे में भगवान रहते हैं, इसलिए कोई अपशुकन नहीं होता। तुम गधे का तिरस्कार करोगे तो वह उसमें बैठे हुए भगवान को पहुँचता है, उससे तुझे भयंकर दोष लगता है। वापस ऐसा नहीं होना चाहिए।' इस तरह से यह उल्टा ज्ञान है, इसके आधार पर 'एडजस्ट' नहीं हो पाते।

### शुद्ध व्यवहार मोक्षगामी है

क्रमिक मार्ग यानी शुद्ध व्यवहारवाले बनकर शुद्धात्मा बनो और अक्रम मार्ग यानी पहले शुद्धात्मा बनने के बाद शुद्ध व्यवहार करो। शुद्ध व्यवहार में सारा ही व्यवहार होता है, लेकिन उसमें वीतरागता

होती है। जब एक-दो जन्मों में मोक्ष में जानेवाले होते हैं, वहीं से शुद्ध व्यवहार की शुरुआत होती है।

शुद्ध व्यवहार जो स्पर्श नहीं करे, वही है 'निश्चय'। व्यवहार इस प्रकार से पूरा करना है कि वह निश्चय को स्पर्श न करे, फिर चाहे किसी भी प्रकार का व्यवहार क्यों न हो।

चोखे व्यवहार और शुद्ध व्यवहार में फर्क है। व्यवहार चोखा रखे तो वह मानवधर्म कहलाता है और शुद्ध व्यवहार तो मोक्ष में ले जाता है। बाहर या घर में झगड़ा नहीं करना, वह चोखा व्यवहार कहलाता है और आदर्श व्यवहार किसे कहते हैं? जो खुद की सुगंध फैलाए वह।

### नाटक खेलकर, अपना काम निकाल लें

इस संसार में सुख नहीं है, वह समझना तो पड़ेगा न? भाई अपमान करें, मेमसाहब भी अपमान करें, बच्चे अपमान करें! यह तो सारा नाटकीय व्यवहार है, बाकी इनमें से थोड़े ही कोई साथ में आनेवाला हैं?

आप खुद शुद्धात्मा और यह सारा व्यवहार दिखावा का है यानी कि 'सुपरफ्लुअस' रहना है। खुद को 'होम डिपार्टमेन्ट' (स्व) में रहना है और 'फॉरेन' (पर) में 'सुपरफ्लुअस' रहना है। 'सुपरफ्लुअस' यानी तन्मयाकार वृत्ति नहीं, बल्कि ड्रामेटिक (नाटकीय), वह। सिर्फ यह 'ड्रामा' ही करना है। 'ड्रामा' में नुकसान हुआ तब भी हँसना और नफा हुआ तब भी हँसना। 'ड्रामा' में दिखावा भी करना पड़ता है, नुकसान हुआ हो तो उसका दिखावा करना पड़ता है। मुँह पर बोलते भी हैं कि बहुत नुकसान हुआ, लेकिन भीतर तन्मयाकार नहीं हों। हमें 'लटकती सलाम' रखनी है। कई लोग नहीं कहते कि भाई, मेरा तो इसके साथ 'लटकती सलाम' जैसा संबंध है! उसी तरह सारे जगत् के साथ रहना है। जिसे पूरे जगत् के साथ 'लटकती

सलाम' रखना आ गया, वह ज्ञानी हो गया। इस देह के साथ भी 'लटकती सलाम'! हम निरंतर सभी के साथ 'लटकती सलाम' रखते हैं, फिर भी सब कहते हैं कि 'आप हम पर बहुत अच्छा भाव रखते हैं।' मैं व्यवहार सभी करता हूँ लेकिन आत्मा में रहकर। भगवान महावीर को कर्म खपाने के लिए साठ मील चलकर अनार्य क्षेत्र में जाना पड़ा था, और आज के लोग तो पुण्यवान हैं इसलिए घर बैठे अनार्य क्षेत्र है! कैसे धन्य भाग्य! यह तो अत्यंत लाभदायक है कर्म खपाने के लिए, यदि सीधा रहे तो।

### आज्ञा का पालन करते हुए व्यवहार निपटाना

हमने तो क्या कहा है, कि यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद यदि चिंता रहे तो उसकी ज़िम्मेदारी हमारी है! लेकिन इस आज्ञा का पालन होना चाहिए। आज्ञाएँ मुश्किल नहीं है। आप प्रेक्टिस करना शुरू कर दो।

**प्रश्नकर्ता :** पालन करना शुरू कर दिया है।

**दादाश्री :** आपने शुरू कर दिया है न? अभी से इसकी प्रेक्टिस करते रहो। वर्ना सहज नहीं है, यह वस्तु। क्योंकि नया इंजन होता है न, उसे अगर रवाँ (अभ्यस्त) नहीं किया हो तो नहीं चलता। उसे हेन्डल मार-मारकर हमें ठिकाने पर लाना पड़ता है। नई बहू के साथ भी ढंग से रहना पड़ता है। सबकुछ नया-नया हो तो रवाँ करना पड़ता है। पहले दिन अगर बहू रूठ जाए और हम भी रूठ जाएँ तो बरकत कैसे आएगी? यदि रूठ जाए तो हमें धीरे से

कहना चाहिए कि घबराना मत हम एक ही हैं। ऐसे-वैसे अटा-पटाकर काम लेना चाहिए। वह भी रूठ जाए और हम भी रूठ जाएँ तो फिर बाकी क्या बचा? काम लेना आना चाहिए न या नहीं आना चाहिए?

देखो सब खुश हो गए हैं न? बात को समझना पड़ेगा या नहीं? मैं तो आपको स्वतंत्र करवाने आया हूँ।

### वास्तव में सिर्फ घर को ही जीतना है।

यह संसार घर के ही लोगों के कारण कायम है। अन्य किसी चीज़ से नहीं। घर का लाभ लेना नहीं आता। यह तो पाँच-छः लोगों का ऐसोसिएशन (संघ) हैं। वास्तव में दुनिया को नहीं जीतना है बल्कि घर को जीतना है।

घर में तो व्यवहार सुंदर कर देना चाहिए। 'वाइफ' के मन में ऐसा रहना चाहिए कि 'ऐसा पति नहीं मिलेगा कभी' और पति के मन में ऐसा रहे कि ऐसी 'वाइफ भी कभी नहीं मिलेगी,' जब ऐसा हिसाब ला दें, तो आप सही हो!

हमने इस संसार की बहुत शोध की हुई है। उच्चतम शोध करने के बाद हम ये सभी बातें कर रहे हैं। संसार-व्यवहार में कैसे रहना है, वह भी सिखाते हैं और मोक्ष में कैसे जा सकते हैं वह भी सिखाते हैं। आपकी अड़चनें कैसे कम हों, वही हमारा हेतु (लक्ष्य) है।

- जय सच्चिदानंद

### 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या [dadavani@dadabhagwan.org](mailto:dadavani@dadabhagwan.org) इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

७-१३ जुलाई : सेन्ट लुईस में नोर्थ सेन्ट्रल यू.एस.ए के महात्माओं द्वारा आयोजित गुरुपूर्णिमा का शुभ आरंभ दिनांक ७, शाम को पूज्य श्री के शुभ हस्तों से हुआ। महोत्सव का जो स्थल था, सेन्ट लुईस युनियन स्टेशन होटल, पुराने समय में यह रेल्वे स्टेशन था और योगानुयोग मुख्य हॉल के स्थान पर प्लेटफॉर्म नं-३ था। महोत्सव के दौरान ज्ञानविधि में २१० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया और लगभग २२२० महात्माओं ने हिस्सा लिया था। गुरुपूर्णिमा में पहली बार 'साइन्स फेयर' आयोजित किया गया था, जिसमें ७ से १२ सालों के बच्चों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस साइन्स फेयर में दादा के 'अक्रम विज्ञान' को विज्ञान के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया था। इसके अलावा बच्चों के लिए पपेट शो, ड्रामा, डान्स बगैरह कार्यक्रम भी रखे गए थे। शिविर दौरान 'अहिंसा' पुस्तक पर पारायण, आराधना-विराधना, निरिच्छक दृष्टि से निरांवल का प्रोग्रेस बगैरह विषयों पर और जनरल प्रश्नोत्तरी भी हुई थी।

गुरुपूर्णिमा के दिन पूज्य श्री ने विशेष संदेश देते हुए चौथी आज्ञा पर जोर दिया था। सहाध्यायियों के साथ, नजदीक की व्यक्तियों के साथ समभाव से *निकाल* पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा। इसके बाद स्वामी और दादाजी का पूजन और आरती की गई। महात्माओं ने दादाजी का पूजन करके भाव से मोक्षमार्ग के लिए पूर्ण स्वरूपी दादाजी से शक्तियाँ माँगी थीं। अगले साल गुरुपूर्णिमा फिनिक्स शहर में आयोजित करने की पूज्य श्री ने घोषणा की।

भारत के अलग-अलग, लगभग ६५ सेन्टोरों पर आत्मोल्लास और आनंद-उमंग के साथ गुरुपूर्णिमा मनाई गई थी। कुल मिलाकर ३०,००० से भी ज्यादा महात्मा अलग-अलग सेन्टर पर इस उत्सव में सम्मिलित हुए थे। आप्तसंकुल के भाइयों ने अधिकतर सेन्टोरों पर इस कार्यक्रम का प्रतिनिधित्व किया था।

१८-२१ जुलाई : सानहोज में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान १३५ मुमुक्षु उपस्थित रहें। पहले दिन महात्माओं के लिए विशेष सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें महात्माओं ने ज्ञान संबंधी गहराईवाले प्रश्न पूछे थे। अंतिम दिन लॉस गायेस के वसोना पार्क में पूज्य श्री की निश्रा में पिकनिक का आयोजन किया गया, जहाँ पर महात्माओं को 'दादा दरबार' में व्यक्तिगत मुलाकात और दर्शन का लाभ मिला था। स्थानिक महात्माओं ने अलग-अलग सेवा के दौरान पूज्य श्री के नजदीक सानिध्य का अवसर मिलने से धन्यता का अनुभव किया।

२२-२३ जुलाई : फिनिक्स में दो दिनों के लिए सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पहले दिन लगभग २२५ महात्माओं ने पूज्य श्री के विशेष सत्संग का लाभ लिया। दूसरे दिन आयोजित 'दादा दरबार' में स्थानिक महात्माओं को पूज्य श्री के दर्शन और पर्सनल टच का अवसर मिला। शाम को आप्तपुत्र के सत्संग में भी काफी महात्मा उपस्थित थे।

२४-२७ जुलाई : लॉस एन्जलिस में पहले दिन महात्माओं के लिए विशेष सत्संग का आयोजन किया गया। इसके बाद 'दादा दरबार' का आयोजन किया गया, जिसमें हर एक महात्मा ने पूज्य श्री से व्यक्तिगत मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त किए। दूसरे दिन पूज्य श्री के साथ पिकनिक का आयोजन भी किया गया। यहाँ पर आयोजित ज्ञानविधि में १४० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन नए ज्ञान प्राप्त महात्माओं के लिए फोलोअप सत्संग रखा गया था।

३० जुलाई : दो महिनों के विदेश सत्संग प्रवास के बाद पूज्य श्री का सीमंधर सिटी में आगमन हुआ। महात्माओं ने कतार में खड़े रहकर सीमंधर सिटी में पूज्य श्री का अभिवादन किया। रात्रि समय जायजेन्टिक हॉल में महात्माओं से मिलकर पूज्य श्री ने विदेश के अनुभव कहे।

८-१० अगस्त : पूणे में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान ८५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। महाराष्ट्र के विविध गाँव और शहरों में से लगभग ६०० मुमुक्षु महात्मा आए थे। पूज्य श्री के श्री मुख से मराठी में सत्संग सुनकर स्थानिक मुमुक्षु अति आनंद विभोर हो गए और मराठी में और भी सत्संग करने के लिए जोर दिया था। पूज्य श्री ने हिन्दी, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी चार भाषाओं में सत्संग किया। रक्षाबंधन के दिन आयोजित सेवार्थी सत्संग में लगभग १५० सेवार्थियों को पूज्य श्री के विशेष सत्संग, दर्शन और रक्षाबंधन का लाभ मिला था। ज्ञानविधि के पश्चात् महात्माओं के लिए विशेष चरणस्पर्श का कार्यक्रम रखा गया।

१४-१५ अगस्त : अडालज -त्रिमंदिर संकुल के दादानगर में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि दौरान लगभग १२४० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिसमें श्रीलंका से आए हुए और मुस्लिम मुमुक्षु भी शामिल थे।

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

**इन्दौर**

दिनांक : 21 सितम्बर,

समय : दोपहर 3-30 से 7

संपर्क : 9039936173

स्थल : ६३, कैलास मार्ग (पुराना धाधु भवन), डो. किशोर मीत्तल के पास, अंतिम चौराहे के पास.

### आफ्रिका - दुबई सत्संग प्रवास

**दुबई**

दिनांक : 2 से 5 अक्टूबर, स्थल और समय के लिए संपर्क : +971 557 316937, 501 364 530

**केन्या**

दिनांक : 7 से 16 अक्टूबर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : +254 711 923232

**युगान्डा**

दिनांक : 18 से 19 अक्टूबर, स्थल और समय की जानकारी के लिए संपर्क : +254 712 757575

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**

- + 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन' - बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन' - भोपाल पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
- + 'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

**USA**

- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

**Dubai**

- + 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**Australia**

- + 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**New Zealand**

- + 'सब टीवी' पर हर रोज दोपहर १२ से १२-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**USA-Canada-UK-Singapore**

- + 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

**भारत**

- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- + 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

**USA**

- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

**UK**

- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में) - नया कार्यक्रम

**Singapore**

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**Australia**

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**New Zealand**

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

**USA-UK-Africa-Aus.** + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

## दादावाणी

### Atmagnani Puja Deepakbhai's Australia-New Zealand-Singapore Satsang Schedule - 2014

Date	Day	Session	From	To	Venue	Contact No. & Email
<b>AUSTRALIA SATSANG DETAILS</b>						
3-Oct	Fri	Satsang	7.30PM	9.30PM	Sydney Bahai Centre	+61 96260029
4-Oct	Sat	<b>GNAN VIDHI</b>	4.00PM	7.00PM	107 Derby St. Silverwater	+61 402179706
5-Oct	Sun	<b>Aptputra Satsang</b>	10.00AM	12.00PM	<b>NSW 2028</b>	+61 411146576
5-Oct	Sun	Satsang	4.30PM	6.30PM		
6-Oct	Mon	Murti Pranpratishta	9.30AM	1.00PM		sydney.dadabhagwan@gmail.com
<b>NEW ZEALAND SATSANG DETAILS</b>						
10-Oct	Fri	Satsang	7.00PM	9.00PM	Sri Shirdi Saibaba sansthan hall,	+64 9 9486119
11-Oct	Sat	<b>Aptputra Satsang</b>	10.30AM	12.30PM	12-18 Princess Street,	+64 21 2363348
11-Oct	Sat	<b>GNAN VIDHI</b>	5.00PM	8.00PM	<b>Onehunga, Auckland 1061</b>	+64 27 6939036
<b>SINGAPORE SATSANG DETAILS</b>						
18-Oct	Sat	Satsang	10.00AM	12.30PM	Singapore Sindhi Association,	+ 65 81129229
18-Oct	Sat	Satsang	4.30PM	6.30PM	795 Mountbatten Road,	+ 65 91457800
19-Oct	Sun	<b>GNAN VIDHI</b>	3.00PM	7.00PM	Singapore	info@sg.dadabhagwan.org
20-Oct	Mon	Satsang	8.00PM	11.00PM		singapore.dadabhagwan@hotmail.com

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### अडालज त्रिमंदिर

दि. २३ अक्टूबर (गुरु), रात ८ से १० - दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

दि. २४ अक्टूबर (शुक्र), सुबह ८-३० से १ - नूतन वर्ष ( वि.सं.२०७१ ) के अवसर पर दर्शन-पूजन-भक्ति

दि. १ नवम्बर (शनि) - शाम ४ -३० से ७ - सत्संग तथा २ नवम्बर (रवि), दोपहर ३-३० से ७ -ज्ञानविधि

### परम पूज्य दादा भगवान का १०७वाँ जन्मजयंती महोत्सव

दि. ५ नवम्बर (बुध), शाम ५ बजे - महोत्सव शुभारंभ, रात ८ से १०-३० - सत्संग

दि. ६ नवम्बर (गुरु), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ६-३० - जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति

दि. ७ नवम्बर (शुक्र), सुबह ९-३० से १२, रात ८ से १०-३० - सत्संग

दि. ८ नवम्बर (शनि), सुबह ९-३० से १२, रात ८ से १०-३० - सत्संग

दि. ९ नवम्बर (रवि), सुबह ९-३० से १२ - सत्संग तथा शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

**स्थल :** इफको कॉलोनी के पास, रोटरी सर्कल, गांधीधाम-आदिपुर रोड, गांधीधाम ( कच्छ ). **संपर्क :** 9924348844

#### ‘दादावाणी’ के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

**मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क :** अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : ( दादा मंदिर ) 9924343335,

राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901,

दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232),

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

सितम्बर २०१४  
वर्ष-९ अंक-११  
अखंड क्रमांक - १०७

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014  
Valid up to 31-12-2014  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012  
Valid up to 31-12-2014  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.



### आमने-सामने एक-दूसरे की बात को समझकर लाओ समाधान

कोई भी क्लेश से मुक्त नहीं हो सकता है इस जगत् में। एज्यूकेटेड (शिक्षित) लोग ही अभी घर में ज्यादा झगड़े करते हैं ! एज्यूकेटेड तो किसे कहते हैं कि जिसके घर में सुबह से लेकर शाम तक बिल्कुल भी क्लेश न हो ! दोनों समझ जाँँ। हमें धीरे से कहना है कि देखो, मैं तो समझ गया हूँ लेकिन लगता है आपने अभी भी पूरी तरह से नहीं समझा है, तो फिर समझ लो आप पूरी तरह से। फिर से अपने बीच कोई झंझट नहीं होनी चाहिए। और दादाजी कह रहे थे कि ऐसा क्लेश नहीं होना चाहिए। जहाँ क्लेश नहीं है, वहाँ भगवान अवश्य रहते ही हैं, भगवान वहाँ से जाते ही नहीं। ऐसे करते-करते भी अगर झगड़ा हो गया तो दोनों बैठकर भगवान के नाम से पश्चाताप करना कि अब क्लेश नहीं करेंगे, हमसे भूल-चूक हो गई। हाँ, बस ! तो फिर दोनों का समाधान हो जाएगा।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.